ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक,
सामाजिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष : 66 अंक : 4 अप्रैल, 2015

जब बैसाखी आती है

धुंध की चादर उतार कर
फूलों को जब भी खुलकर हंसी आती है
तब बैसाखी आती है............

बादलों को चूमकर, हवा में लहराती फसल
जब किसान को बुलाती है
तब बैसाखी आती है............

किसानों की टोली जब
गांव में मिलकर खुशी मनाती है
तब बैसाखी आती है............

मेरे देश की मिट्टी जब भी
मुझे आवाज देकर बुलाती है
तब बैसाखी आती है............

शील, सन्तोष, सबकुछ मिले आपको
पूर्ण हो आपकी हर आशा
यही दुआ है हमारी

जब बैसाखी आती है...........

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक
प्रमोद कुमार ऐचरा

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700
(50 वर्ष के लिए)

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	4
सबद-38-39	5
साखी उमाहो राग धनाश्री	6
धर्म रक्षक भगवान् जाम्भोजी, मिट्टी	9-10
प्रभु प्रसाद, नशा और नौजवान	11-12
वैदिक संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण	13
भय से मुक्ति, कहाँ खो गए वो दिन, एक आस	16-17
समाज में बढ़ता अन्धविश्वास	18
बधाई सन्देश	19
कन्हैया को पुकारा, है गौएं बेसहारा	20
परम तत्त्व की धुन, पिता जीवन है	21
हमारी मांग नहीं है, पवन रूप फिरे परमेश्वर	22
नीली वर्दी पहनने को मजबूर बिश्नोई विद्यार्थी	23
एक वृक्ष की आत्मकथा, भजन	24
बिश्नोई समाज के प्रति हमारे मन की बात	25
महिला सशक्तिकरण : क्यों और कैसे, सत्संग	26
स्वयं को पहचानो	27
उपेक्षा का शिकार नगीना शहीदी स्थल	28
सामाजिक हलचल- कांठ में जाम्भाणी राष्ट्रीय संगोष्ठी...	29
विष्णुधाम सोनड़ी में विशाल जम्भेश्वर मेला सम्पन्न	31
जाम्भोलाव मेला सम्पन्न	32
लोदीपुर में भरा विशाल मेला, सफल जीवन	33
फार्म 4	34

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय

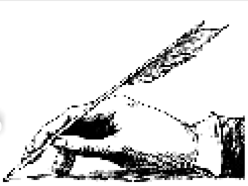

सतगुरु मिलियो सतपथ बतायो

अधर्म के नाश व धर्म के विस्तार के लिए युगों-युगों से परमपिता परमात्मा इस धरा-धाम पर अवतरित होते रहे हैं। जब-जब साधु-सज्जनों पर संकट आता है, दुष्टजनों का आधिपत्य बढ़ता है, मानवता की नाव डूबने लगती है, तब-तब भक्त वत्सल, धर्म रक्षक, मानवता पोषक, दुष्ट नाशक भगवान विष्णु बैकुण्ठ के सुख त्यागकर मर्त्यलोक में आते है और अपने चरित्र को सार्थक करते हैं। यह परम्परा सतयुग से अद्यावधि निरन्तर है। चारों युगों में भगवान विष्णु के दशावतार तो सर्वज्ञात व शास्त्र निरुपित ही है परन्तु इनके अतिरिक्त भी समय व परिस्थिति के अनुसार भगवान के सामयिक अवतार होते हैं। भगवान विष्णु ने विक्रमीय सोलहवीं शताब्दी में एक ऐसा ही सामयिक अवतार सम्वत् 1508 की भादो वदी अष्टमी को पीपासर में गुरु जाम्भो जी के रूप में धारण किया था।

विक्रमीय संवत् की सोलहवीं शताब्दी में धर्म की पतवार लड़खड़ाने लगी थी, अनाचार का बोल बाला था, राजा-प्रजा सभी कर्त्तव्य विमुख हो गये थे, धर्म के नाम पर व्यवसाय और पोंगापंथी का चलन हो गया था, लोग सभ्य व संतुलित जीवनचर्या को छोड़कर भोग-विलास व दुराचार में डूब चुके थे, ऐसे विषाक्त वातावरण में आम आदमी का दम घुट रहा था, उसे कोई राह नहीं सूझ रही थी। इसी घोर संकट के समय में भगवान् विष्णु ने सतयुग में भक्त प्रहलाद को दिए वचन को निभाने का कार्य किया अर्थात् शेष बारह करोड़ जीवों के उद्धारार्थ इस धरा-धाम पर आए। यह विष्णु जी का पूर्णकला अवतार था। इस अवतार में भगवान विष्णु ने न केवल 12 कोटि जीवों का उद्धार किया अपितु एक ऐसे सतपथ 'बिश्नोई पंथ' की स्थापना की, जिसके राही बनकर मनुष्य युगों-युगों तक आत्म कल्याण व उद्धार कर सकेगा। गुरु जाम्भो जी के रूप में भगवान विष्णु द्वारा मानवता पर किया गया बहुत बड़ा उपकार है। 'बिश्नोई पंथ' वास्तव में सतपथ है, इसके राही का कल्याण निश्चित है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य इसी पथ से पूर्ण हो सकता है। केवल यही पंथ 'जीया जुगति मुआ मुगति' देने में समर्थ है।

अब यक्ष प्रश्न यह है कि हम इस सतपथ के राही कितने अंशों में हैं? गुरु महाराज ने तो स्पष्ट कहा था कि 'सतगुरु मिलियो सतपथ बताओ, भ्रांत चुकाई' पर आज स्थिति दूसरी है। भ्रांत (भ्रांति) मनो मस्तिष्क पर छायी है। हमें करणीय-अकरणीय का कितना ध्यान है? बिश्नोई पंथ की आचार संहिता (29 धर्म नियम) जीवनाचरण में कहाँ तक है? आज हम सांसारिक हवा के झोंके में जिस दिशा में बढ़ रहे हैं क्या वह दिशा गुरु महाराज ने दिखाई थी? क्या आज का बिश्नोई समाज वही आदर्श समाज है, जिसकी 'परिकल्पना गुरु जाम्भो जी ने की थी? हमें इन यक्ष प्रश्नों का उत्तर स्वयं से लेना होगा। यह समय आत्म मुग्धता का नहीं, आत्मावलोकन का है। माना कि समस्त संसार तीव्र गति से बदल रहा है पर इसका मतलब यह तो नहीं कि हम दूसरों की देखादेखी अपने को बदल लें और उन मूल्यों को छोड़ दें जिनकी स्थापना गुरु जाम्भोजी ने की थी। आओ संकल्प लें कि हम उसी सतपथ के राही बनेंगे जो गुरु महाराज ने हमें दिखाया था।

सबदवाणी

सबद–38–39

दोहा–

गुंसाई एक आय के, बोला ऐसी बात।
ठुमरा पहरा गले में, भेख हमारा साच।

एक गुंसाई साधु ने आकर श्री देवजी से कहा कि आपके पास कोई साधुता का चि जैसे ठुमरा कंठी माला तिलक आदि नहीं है। बिना चि के हम आपको कौन से पंथ का साधु स्वीकार करें। मेरे गले में तो आप देखिये यह ठुमरा पहना हुआ है। मेरा भेख ही सच्चे साधु का है। इसलिये मैं तो सच्चा साधु भी हूं। जम्भदेव जी ने उनके प्रति सबद कहा–

सबद–38

ओ३म् रे रे पिण्ड स पिण्डूं,
निरघन जीव क्यूं खंडूं, ताछै खंड बिहंडूं।

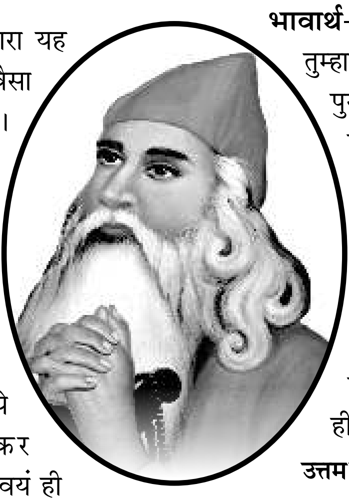

भावार्थ– अरे गोंसाई! जैसा तुम्हारा यह पंचभौतिक पिण्ड अर्थात् शरीर है वैसा ही अन्य सभी जीवों का शरीर है। कोई ठुमरा, माला तिलक से शरीर में परिवर्तन आने वाला नहीं है। हे निरघृण! तूने इस पार्थिव दुर्गन्धमय शरीर को ही संवारा इसी को ही महता दी है तथा इसमें रहने वाले जीव को खण्डित कर दिया है। इसकी अवहेलना कर दी है। इसलिये तेरा जीवन खाण्डित होकर टुकड़े–टुकड़े हो चुका है। तुमने स्वयं ही अपनी हत्या कर डाली है।

घड़िये से घमण्डूं, अइयां पन्थ कु पन्थूं, जइयां गुरु न चीन्हों।
तइयां सींच्या न मूलूं, कोई कोई बोलत थूलूं।

तुमने परम तत्त्व की खोज तो नहीं की परन्तु कच्चे घड़े सदृश इस शरीर पर ही अभिमान किया। यह सद्पन्थ नहीं कुपन्थ है। इस मार्ग से तो तुम मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकोगे। यदि गन्तव्य धाम को पहुंचना है तो गुरु के बताये हुये मार्ग का अनुसरण करो। उस परम तत्त्व की खोज करो यही मूल है कुछ लोग तो स्वयं को ही सिद्ध बताकर भी स्थूल ही बोलते हैं।

***

दोहा–

तब ही आयस यूं कही, जम्भगुरु सूं बात।
जोग जुगत श्रीय हुवै, हमें बतावो तात।

ऊपर के सबद को श्रवण करके वह गोंसाई कहने लगा–कि हे देव! हमें आप ही योग की युक्ति बतलाइये जिससे हमारा कल्याण हो सके। श्री देवजी ने इस प्रकार से सबद सुनाया–

सबद–39

ओ३म् उत्तम संग सूं संगूं, उत्तम रंग सूं रंगूं, उत्तम लंग सूं लंगूं।

भावार्थ– यदि तुम्हें भवसागर से पार होना है तो सर्वप्रथम तुम्हारा कर्त्तव्य बनता है कि उत्तम संगति करना। उत्तम पुरुष के साथ वार्तालाप करना ही अच्छा संग है और यदि कोई रंग ही अपने उपर चढ़ाना है तो वह भी उत्तम ही ग्रहण करना अर्थात् यदि अपने जीवन को शुद्ध संस्कृत करना है तो अच्छे संस्कारों को ही धारण करना। संसार से पार लांघना है तो फिर वापिस मृत्यु–जन्म के चक्कर में न आना पड़े। ऐसा उत्तम लोक ही प्राप्त करना। जो भी शुभ कार्य करना हो तो पूर्णता से करना। अधूरा किया हुआ कर्त्तव्य बीच में ही लटका देता है।

उत्तम ढ़ंग सूं ढ़ंगूं, उत्तम जंग सूं जंगूं, तातै सहज सुलीलूं।
सहज सुं पंथूं, मरतक मोक्ष दवारूं।

जीवन जीने का ढ़ंग भी यदि उत्तम शालीनता से हो तो वही जीना है। यदि तुम्हें युद्ध ही करना है अर्थात् मन इन्द्रिय बलवान शत्रु है इन्हें जीतना ही उत्तम जंग है इससे तुम्हारे जीवन में सहज ही सुलीला का अवतरण होगा, यानि तुम्हारा जीवन आनन्दमय हो जायेगा। यही सहज सुमार्ग है। इसी मार्ग पर चलने से मृत्यु काल में मोक्ष की प्राप्ति होगी।

– साभार 'जंभसागर'

वील्होजी कृत साखी उमाहो

बाबो जंबूदीपे प्रगट्यो, चोचक हुवो उजास।
आप दीठो केवल कथै, जिहिं गुरु की हम आस।1।
बलिजाऊं जांभे रे नाम नें, साधां मोमणां रो प्राण अधार।
थे जांरे हिरदै वसो, तेरा जन पहुंता पार।2।
संभराथल रली आंवणां, जित देव तणों दीवाण।
परगटियो पगड़ो हुवो, निश अंधियारी भाण।3।
एकलवाई थल खड़यो, करत सभी मुख जाप।
स्वयंम्भू का सिवरण करै, जो जपै सो आप।4।
भूख नांहीं तृसना नांही, गुरु मेल्ही नींद निवार।
काम क्रोध व्यापै नहीं, जिहिं गुरु की बलिहार।5।
भगवीं टोपी पहरंतो, गहि कंथा दस नाम।
झीणी बाणी बोलंतो, गुरु बरज्यो वाद विराम।6।
सिकन्दर परमोधियो, परच्यो महम्मद खान।
राव राणा निव चालिया, संभल केवल ज्ञान।7।
मध्यम से उत्तम किया, खरी घड़ी टकसाल।
कहर क्रोध चुकाय कै, गुरु तोड़यो माया जाल।8।
सीप वसै मंझ सायरा, ओपत सायर साथ।
रैणायर राचे नहीं, चाह बूंद स्वान्त।9।
जल सारे विण माछला, जल बिन मच्छ मर जाय।
देव थे तो सारो हम बिना, तुम बिन हम मर जाय।10।
वोहो जल बेड़ी डुबंता, बूझे नहीं गंवार।
केवल जंभे बाहरो म्हानें, कौण उतारे पार।11।
हंसा रो मान सरोवरां, कोयल अम्बाराय।
मधुकर कमल रै करे तेरा, साधु विष्णु के नाम।12।
जल बिना तृसना न मिटे, अन्न बिन तिरपत न थाय।
केवल जंभे बाहरो म्हानें, कोण कहे समझाय।13।
पपीयो पीव पीव करे, बोली सह पीयास।
भूमि पड़ियो भावे नहीं, बूंद अधर की आस।14।
ठग पोहमी पाहण घणां, मेल्ही दूनी भूलाय।
पाखण्ड कर परमन हड़े, तहां मेरो मन न पतियाय।15।
गुरु काच कथीर नें, राचही विणज्या मोती हीर।

मेरो मन लागो श्याम सूं, गूदड़ियो गूणों को गहीर।16।
निर्धनियां धन वाल्हमो, किरपण वाल्हो दाम।
विखियां नें वाली कामणी, तेरा साधु विसन के नाम।17।
धन्यरे परेवा बापड़ा, थारो वासो थान मुकाम।
चूण चुगे गुटका करे, सदा चितारे श्याम।18।
अम्बाराय बधावणा, आनन्द ठामो ठाम।
श्याम उमाहो मांडियो, पोह कियो पार गिराम।19।
बोल्यो गुरु उमाहड़ो, करमन मोटी आस।
आवागवण चुकाय के, म्हानें द्यो अमरापुर वास।20।
अवसर मिलिया मोमणा, भल मेलो कब होय।
दु:खी विहावै तुम बिना, हर बिन धीर न होय।21।
काहे के मन को धणी, काहे के गुरु पीर।
वील्ह भणे विश्नोइयां, आपां नाम विसन के सीर।22।

यह उमाहो वील्होजी की विशेष रचना है तथा अन्तिम संदेश तथा वील्होजी की अन्तिम प्रार्थना भी है। जब इस संसार से प्रस्थान की तैयारी होने लगी तब अपने शिष्यों को पास में बैठाकर भाव विभोर होकर यह उमाहो सुनाया था। उमाहो का अर्थ भी उमंग है। उनकी उमंग की तरंगें इस उमाहो द्वारा देखी जा सकती है।

भावार्थ- वील्होजी कहते है कि बाबो स्वामी श्री विष्णु इस जम्बू द्वीप में प्रगट हुए है। उनके प्रगट होने से चारों दिशाओं में प्रकाश हो गया है, तथा अन्धकार की निवृति हुई है। जैसा सतगुरु जाम्भोजी ने अनुभव किया था वैसा ही कथन किया है, ऐसे गुरुदेव की हम शरण में हैं तथा उन्हीं की हमें आशा भी है।1। जाम्भोजी के नाम पर मैं न्योछावर होता हूं बार-बार प्रणाम करता हूं। ऐसा दिव्य नाम साधु भक्तों के प्राणों का आधार है। इन्हीं नाम पर मेरे भी प्राण टिके हुए है। हे देव! आप जिसके भी हृदय में निवास करेंगे वही जन संसार सागर से पार हो जायेगा।2। धन्य है वे लोग जो सभी मिलकर सम्भराथल आये है जहां हरि कंकेहड़ी के नीचे स्वयं देव का आसन था। जिस प्रकार से सूर्योदय हो जाने पर रात्रि का अंधकार मिट जाता है और प्रात: का प्रकाश आता है उसी प्रकार से जगत को श्रीदेव ने प्रकाशित किया।3। सम्भराथल पर स्वयं अकेले ही रहकर स्वयंभू का स्मरण करते तथा जो भी उनके पास आता वह भी ऐसा ही जप सीखता एवं करता था। जिस स्वयंभू का जप करते वे तो स्वयं आप ही थे।4। जिनको कभी भी भूख प्यास तृष्णा आदि खट् ऊर्मियां नहीं सताती थी। तथा काम क्रोध भी अपना प्रभाव नहीं दिखा सकते थे। ऐसे द्वन्द्वों से रहित सतगुरु देव की मैं शरण हूं।5। जिन्होंने भगवीं टोपी पहन रखी थी तथा शरीर पर चोला भी दसनाम सन्यास का धारण कर रखा था एवं झीणी बाणी तत्व दर्शाने वाली, मधुर वाणी बोला करते थे। तथा वाद-विवाद व्यर्थ के झगड़ों को मिटाने वाले ऐसे सतगुरु की मैं शरण हूं।6। अहंकार में मुग्ध दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी को हक की कमाई का उपदेश देकर सद्मार्ग का अनुयायी बनाया तथा उसी प्रकार से नागौर के सुबेदार महमदखां को भी अपनी लीला से परचाया और भी अनेकों रावण राणां नम्र भाव होकर सद्मार्ग पर चले थे क्योंकि कैवल्य ज्ञान देकर के उन्हें समझाया था।7। जो लोग मध्यम थे उनको उतम किया। उनतीस नियम रूपी मर्यादा को बिल्कुल युक्ति युक्त तथा सत्य बताया। उन लोगों के कलह क्रोध मिटाकर गुरु ने माया जाल को तोड़ दिया।8। सीप समुद्र के अन्दर ही रहती है तथा समुद्र का जल भी उसके साथ

ही रहता है किन्तु वह सीप समुद्र के जल को ग्रहण नहीं करती परन्तु उसे तो स्वाति नक्षत्र में वर्षा के जल की बूंदों की ही आशा है तथा उसकी आशा वह पूर्ण भी होती है उसी प्रकार से वील्होजी कहते है कि मेरी भी आशा हे देव आपकी तरफ ही है। मेरी आशा भी अवश्य ही पूर्ण होगी तथा मोती बनकर फलदायक होगी।9। जल तो मछली बिना भी रह सकता है परन्तु जल के बिना मछली मर जायेगी उसी प्रकार से हे देव! आप तो हमारे बिना रह सकते है किन्तु हम आपके बिना मछली की भांति मर जायेंगे।10। संसार समुद्र का जल तो अधिक है और साधना रूपी नौका तो बहुत छोटी है तथा नाजुक भी है फिर अपने ही बल बूते पर कैसे पार उतर सकेंगे। इतनी कमजोरी होते हुए भी मूर्ख लोग पार उतरने का उपाय नहीं पूछते है। हे देव! हमें तो केवल आप पर ही भरोसा है। आप ही पार उतार सकोगे। आपके अतिरिक्त और कोई हमारा सहायक नहीं है।11। हंसों का सम्मान तो मान सरोवर पर ही है दूसरी जगहों पर तो बगुला ही समझा जायेगा। कोयल का सम्मान आम के बागों में ही है अन्यत्र तो वह कौवा ही समझी जायेगी। भंवरों का सम्मान भी कमल के फूलों पर ही है अन्य स्थानों पर तो वह एक सामान्य कीट ही समझा जायेगा उसी प्रकार से भक्तों का सम्मान भी विष्णु के नाम स्मरण एवं भक्ति भाव से है अन्यथा उनमें क्या विशेषता है।12। जल के बिना प्यास नहीं मिटती और अन्न के बिना तृप्ति नहीं होती उसी प्रकार से हे देव! आपके बिना भी हमारी ज्ञान पीपासा नहीं मिट सकती, हमें भूले भटके हुए लोगों को कौन समझायेगा।13। पपइया पक्षी भी वर्षा ऋतु में पीऊ-पीऊ की रटन लगाता है। उसकी बोली में प्यास की ही रटन होती है। भूमि पर तो जल भरा हुआ था परन्तु उसको नहीं पीता, स्वाति नक्षत्र की अधर बूंद की ही आशा रखता है तथा उसकी इच्छा पूर्ण भी होती है उसी प्रकार से हे देव! हम भी सांसारिक वासनाओं को छोड़कर आपकी ही इच्छा करते है।14। इस दुनिया में ठग बहुत ही है जो अनेक प्रकार से पत्थर आदि की मूर्तियां बनाकर लेगों को उन्हीं पर सिर पटकने को कहते है और उनसे चढ़ावा लेकर अपना पेट भरते है। ऐसे लोगों ने दुनिया को भ्रम में डाल दिया है। पाखण्ड करके दूसरे के चित को हरण कर लेते है, उन लोगों को अपने वश में करके अपनी इच्छानुसार चलाते है, वील्होजी कहते है कि मेरा मन तो उन पर कभी विश्वास नहीं करता।15। काच कथिर रूप पाखण्डों में वील्होजी कहते है कि मेरा मन नहीं रचता। इन्हें छोड़कर सत्य ज्ञानरूपी हीरों का व्यापार ही करना है। मेरा मन तो श्याम श्री भगवान से ही लगा हुआ है जो गूदड़ियों-मोटा चोला तथा गरीबी वेश में रहते हुए भी गुणों का खजाना है।16। निर्धन आदमी को तो सबसे प्यारा धन ही है। तथा कृपण व्यक्ति को भी रूपये प्यारे है। विषयी व्यक्ति के लिये युवती प्यारी है उसी प्रकार से हे देव! आपके साधु को तो विष्णु का नाम ही प्यारा है।17। धन्य वे प्यारे कबूतर आदि पक्षी जो सदा ही मुकाम के मन्दिर के छाजे पर रहते है। वहां पर चूण चुगते है और श्याम परमात्मा का नाम स्मरण करते हुए गुटरगूं कर रहे है।18। वील्होजी को यहां चारों तरफ खड़े हुए सघन वृक्ष आम के बागों की स्मृति दिलवा रहे है इसलिये कहा-''अम्बाराय बधावणां'' चारों तरफ सघन वृक्ष मानों स्वागत करते हुए दिखाई दे रहे है। सर्वत्र आनन्द ही आनन्द छाया हुआ है इस आनन्द के क्षण में हे श्याम! मैनें यह उमाहो बोला है। क्योंकि मेरे अन्तिम शरण आप ही है।19। हे गुरुदेव! मैने यह उमाहो रूपी प्रार्थना आपके ही सामने की है। यह प्रार्थना मैनें बहुत बड़ी इच्छा लेकर की है। बार-बार जन्म मरण के चक्कर से छुड़वा करके हमें अमरापुरी में सदा के लिये निवास प्रदान कीजिये।20। हे भक्तों! यह सुअवसर प्राप्त हुआ है फिर न जानें कब यह मिलन हो या न भी हो इसलिये इस समय को चूकना ठीक नहीं है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना तो दुखी ही जीवन बिताना होगा। हरि बिना तो धैर्य धारण नहीं हो पाता।21। किसी के तो कोई स्वामी होगा किसी के कोई गुरु पीर होगा, वील्होजी कहते है कि हे बिश्नोइयों। अपना तो विष्णु के नाम में ही सीर संस्कार है। इसलिये विष्णु का ही जप करें।22।

- साभार 'साखी भावार्थ प्रकाश'

धर्म रक्षक भगवान् जाम्भोजी

धर्म मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है, यही नहीं मानव समाज में नैसर्गिक प्रतीत होता है। धार्मिक प्रवृत्ति किस न किसी रूप में मानव के लिए स्वाभाविक साध्य रही है आरोपित बन्धन नहीं। मानव जाति के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जहां किसी अवस्था में जन-समुदाय धर्मविहीन हो। धर्म ही वह सत्ता है, जो मानव प्राणी को पशुओं से उच्च स्थान पर स्थापित करती है। इस विषय में कहा गया है:-

"आहार निद्राभयमैधुनन्ज सामान्यतेद्
पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हितेषामधिको विशेषो धर्मेण हीन पशुभिः
समानाः॥"[1]

(डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी का लेख: धर्म की प्रासंगिकता, दैनिक जागरण, 07-11-2006)

धर्म अपने सभी अर्थों में मानव जीवन को भौतिक समृद्धि से ऊपर उठाकर आध्यात्मिकता की ओर ले जाता है तथा मानवीय जीवन को दिव्य और सुसंस्कृत बनाता है। सदियों से अशान्त एवं व्यग्र मानव धर्म की शरण लेता आया है। 'निर्बल को बलराम' या 'जाको राखे सांईयां मार सके न कोय' आदि कहावतें इसी तथ्य की सूचक हैं।

इतिहास गवाह है जब-जब संसार में अत्याचार एवं अन्याय चरम पर पहुंच जाते हैं तो एक ऐसे महापुरुष का अवतार होता है जो अपनी वाणी और कार्यों के द्वारा एक ऐसे दीप को प्रज्जवलित करता है जिसका प्रकाश अत्याचार, अन्याय एवं अधर्म के अंधकार को दूर करके दया, धर्म और न्याय का मार्ग प्रशस्त कर देता है। ऐसे महान् व्यक्ति प्रत्येक देश, धर्म व समय में जन्म लेते हैं, जिन्हें समाज अवतार, मसीहा, पैगम्बर, संत या गुरु रूप में स्वीकार करता रहा है। ऐसे ही एक महापुरुष का अवतार 'गुरु महाराज जाम्भो जी' के रूप बीर भोग्या राजस्थान की मरू-भूमि में उस समय हुआ जब भारत माता इस्लामी आक्रमणों के प्रहार से कराह रही थी। सर्वत्र अन्याय, अत्याचार, आतंक, भय का महौल था। समाज दो अतिछोरों 'सर्वस्व समर्पण' या 'टूट जाओ झुको नहीं' से आगे कुछ सोच ही नहीं पा रहा था।

ऐसे विकट समय में गुरुदेव जम्भेश्वर जी ने धर्म रक्षा व अन्ततः देश रक्षा का जो मध्यम मार्ग पीड़ित मानवता को दिखाया वह सर्वथा अद्वितीय था। गुरु जी की वाणी से इस्लामी क्रूरता के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया ही, साथ ही हिन्दू समाज की जड़ताएं भी विघटन की ओर प्रवृत हुई जटिल कर्म काण्डों और आडम्बरों, अन्धविश्वासों से निजात दिला कर, धर्म का सच्चा, सरल मार्ग गुरु महाराज ने पीड़ित मानवता को सुझाया।

हिन्दू या सनातन धर्म के मूल सिद्धान्तों, आदर्शों यथा यज्ञ-हवन, अग्नि उपासना (प्रकृति पूजा), सदाचार पर बल, मूर्ति-पूजा का विरोध, आडम्बर हीन, किंतु सादा जीवन जीना आदि को अपनाकर नए पंथ 'बिश्नोई पंथ' की स्थापना कर वह महान् उपकार किया जो आज तक इस राष्ट्र को दुनिया की सबसे पुरातन श्रेष्ठ व जीवित सभ्यता व संस्कृति वाले राष्ट्र के रूप में कायम रखे हुए है अन्यथा भूषण कवि के शब्दों में कहें तो - "सुन्नत होती सबकी," अर्थात् सारा भारत मलेच्छ हो जाता।

इतिहास के पृष्ठों, धर्म संस्कृति और मानवता के अमूल्य रत्नों की परम्परा में इसीलिए उच्च स्थान, श्रद्धा, सम्मान, अमरत्व और यश प्राप्त कर सकने में सफल हुए क्योंकि वे प्रकाश-पुंज बनकर आजीवन परमार्थ का प्रागंण आलोकित करते रहे, पर कष्ट, पर पीड़ा का निवारण करने में संलग्न रहे।

भारतीय परम्परा में चौबीस अवतारों की मान्यता रही है जिनमें दशावतारों की चर्चा प्रमुख रूप से की जाती रही है। मेरे मतानुसार गुरु जम्भेश्वर जी अपने पूर्ववर्ती सभी अवतारों के ज्योति पुंज के रूप में कलिकाल में अवतरित हुए। इस धरा पर धर्म रक्षा व मानवता के त्राण का युगानुरूप व काल उपयुक्त मार्ग 'बिश्नोई पंथ' के रूप में हमें सौगात में दिया।

जाम्भोजी महाराज महावीर स्वामी सम वीतराम योगी थे। बुद्ध की अहिंसा और करुणा का संदेश व्यवहारिक रूप में जन-जन तक पहुंचाया। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के समान मर्यादा का आचरण

कर मर्यादित जीवन को ही सुखी जीवन का संबल बता कर जन-जन को जीवन जीने का सही मार्ग सुझाया।

लीला पुरुषोतम भगवान श्रीकृष्ण की तरह मनोहारी और दैवीय लीलाओं से कलिकाल में संतप्त जनता को सुख पहुंचाया। साक्षात् पूर्ण ब्रह्म परमात्मा विष्णु के तो वे रूप थे ही जो अपने वचन पालनार्थ कलियुग में नर-तन धारण किया।

"प्रह्लादां सुं वाचा किया, आया बारां काजै।
बारा में सौ एक घटै, तो चेलो गुरु लाजैं॥"

(सबदवाणी)

गुरु जम्भेश्वर भगवान की प्रमुख शिक्षाओं का सार रूप में वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है। प्रभु भक्ति और सुमिरण पर बल देते हुए कहा है-

"अङसठि तीरथ हिरदै भीतर, बाहरि लोकाचारू"

(सबद-62)

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने संत संगति को ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग बताते हुए अच्छे जनों की संगत करने की शिक्षा अपने अनुयायियों को दी है-

"लोहो नीर किसी परि तरिबां, उतिमु संग स्नेहु।"

(सबद-14)

गुरु महाराज ने धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्डों और कर्मकाण्डों का विरोध करते हुए गुरु के सान्निध्य में सच्ची भक्ति की शिक्षा दी है-

"भला प्राणी विसन जपो रे, मरण विसारो केहूं।"

(सबद-23)

गुरु की महिमा से भक्त जन्म-मरण से मुक्त हो सकते हैं-

"सतगुरु ऐसा तंत बतावै, जुगि-जुगि जीवै जलमि न आवै।"

(सबद-107)

आडम्बर का खण्डन करते हुए सबदवाणी में कहा गया है-

"दिल साबत हज काबो नेड़ौ, क्या उलबंग पुकारो ?"

(सबद-11)

गुरु महाराज कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी हैं-

"दिल-दिल आप खुदायबंद जागै, सब दिल जाग्यो लोई।"

(सबद-07)

अंहकार का त्याग करके ही मनुष्य परमात्मा को प्राप्त कर सकता है अन्यथा नहीं। यथा-

"जा-जा घमण्ड सूं मंड्यौ, ताकै ताब न छायौ।"

(सबद-18)

गुरुदेव ने जाति-पाती के भेदों का विरोध करते हुए कर्म की महत्ता पर बल दिया है-

"उचित कुली का उतिम न कहिबा, कारण किरिया सारूं।"

(सबद-26)

अतः गुरु जाम्भो जी महाराज के व्यक्तित्व का विवेचन व महिमा वर्णन जितना किया जाये, अनंत है।

पर्यावरण चेतना के प्रणेता, धर्म रक्षक, समाज सुधारक, सामाजिक समरसता के पक्षधर, ईशावतारों के शक्ति व समन्वय पुंज, साक्षात् परमपिता विष्णु दो शब्दों में कहे तो जीने की ऐसी जुगत बताने वाले महापुरुष थे, जिससे मरने पर मुक्ति स्वयमेव मिल जाए।

जियां जुगति मुआं मुक्ति।

❐ **दिलसुखराम,** शेखुपुर दड़ौली,
तह. व जिला फतेहाबाद (हरियाणा)
मो. 9812122588

मिट्टी

मिट्टी मेरे गांव की मिट्टी शहर की मिट्टी,
ना कोई खत ना कोई चिट्ठी,
जिस की खातीर, जिसमें मिल जांऊ वो मेरे देश की मिट्टी,
जहां लहराए प्यारा तिरंगा,
हर हिन्दुस्तानी की है दिल जान वो मिट्टी।
खत बापू को, सलाम माँ को प्रणाम करती है, हर वो चिट्ठी,
कभी हंसाती कभी रूलाती है चिट्ठी,
घर आए खत में बोर्डर की मिट्टी,
जहां लहराए प्यारा तिरंगा,
हर हिन्दुस्तानी की है दिल जान वो मिट्टी।
हर हिन्दुस्तानी का तिलक, हर हिन्दुस्तानी की माँ है मिट्टी,
जय किसान की माँ, जय जवान की शान है, हिन्दुस्तान की मिट्टी,
हरे वृक्ष मत काटो, सबको कहती है सीनू की चिट्ठी,
मिट्टी मेरे गांव की मिट्टी शहर की मिट्टी,
जहां लहराए प्यारा तिरंगा,
हर हिन्दुस्तानी की है दिल जान वो मिट्टी।

❐ **सीनू थापन,** बड़ोपल, फतेहाबाद

प्रभु प्रसाद

आज के युग में इंसान अपने रिश्ते-नाते व कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। प्रभु कृपा से हम कुछ शब्दों के माध्यम से सभी रिश्तों-नातों के कर्त्तव्यों को याद करवाने का प्रयास कर रहे हैं। परमात्मा हमारी वाणी व शब्दों में विराजमान होकर हमारे प्रयास को सफल करने में हमारी सहायता करे, प्रार्थना करते हैं।

माता-पिता के कर्त्तव्य- माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों में अच्छे धार्मिक संस्कार पैदा करें। उन्हें अच्छी शिक्षा दिलवाएं। अपने धर्म के बारे में जानकारी दें। पग-पग पर उनका ध्यान रखें, कहीं वे गलत रास्ते पर तो नहीं जा रहे। हमें लगता है यदि बच्चे धर्मिक होंगे व हर रोज गीता जी का पाठ करने लगें तो वे पढ़ाई में व जीवन में भी सबसे आगे रहेंगे। वे कभी कुछ गलत कर ही नहीं सकते। एक अफसर बनाने से पहले उन्हें एक अच्छा इन्सान अवश्य बनाएं। बच्चों को उनकी जिम्मेवारी का अहसास अवश्य करवाएं। केवल जायज इच्छाओं की पूर्ति करें। बच्चों को दोस्त की तरह रखें ताकि बच्चे आपसे कुछ छिपाएं नहीं। शादी के बाद धीरे-धीरे उन्हें सभी जिम्मेवारियां सोंप दें व खुद परमात्मा से मिलन का प्रयास पहले से भी अधिक करने लगें। बच्चों से केवल प्रेम करें व अपने कर्त्तव्य पूरे करें उनके मोह में न फंसें। मोह केवल परमात्मा से। अपनी पुत्र-वधु को अपनी पुत्री के समान स्नेह करें। घर में प्रेम व शांति बनाए रखें। जहां प्रेम है वहीं परमात्मा है, सब कुछ है।

पति के कर्त्तव्य- पति पर अपने परिवार की सभी जिम्मेवारियां होती हैं। उसे अच्छे कर्म करते हुए अपने परिवार का पालन पोषण करना चाहिए। उसे अपनी पत्नी का आदर करना चाहिए व प्रेम से रहना चाहिए। एक औरत का शादी के बाद पति ही सब कुछ होता है, ये बात पति को ध्यान रखनी चाहिए। उससे कोई गलती हो भी जाए तो सबके सामने बेईज्जत नहीं करना चाहिए। अकेले में प्रेम से समझा देना चाहिए। पत्नी की जायज इच्छाओं की पूर्ति भी करनी चाहिए। पति-पत्नी में यदि प्रेम हो, व दोनों एक दूसरे के लिए जीएं, हर सुख-दु:ख में एक दूसरे का साथ दें तो घर स्वर्ग बन जाएगा। पति को अपने चरित्र का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उसे परमात्मा से मिलन के लिए प्रयास करते रहना चाहिए व अपने बच्चों व पत्नी को भी परमात्मा से मिलन के लिए अग्रसर करना चाहिए। उसे प्रभु श्रीराम की तरह मर्यादा का पालन करना चाहिए। वैसा ही आचरण करना चाहिए।

पत्नी के कर्त्तव्य- एक औरत के लिए परमात्मा के बाद दूसरा स्थान अपने पति का होता है। वह अपने पति व सास-ससुर की सेवा में तत्पर रहे। बच्चों को अच्छे संस्कार दें क्योंकि माता ही बच्चों की पहली गुरु होती है। वह हर कार्य करने से पहले एक बार अवश्य सोचे कि इस कार्य से उसके परिवार की इज्जत पर क्या असर होगा। कहते हैं औरत सहनशीलता की मूर्त होती है। उसे सहनशील, संतोषी, चरित्रवान, शान्त होना चाहिए व अपने पति की कमाई के हिसाब से ही घर चलाना चाहिए। औरत घर को प्रेम से स्वर्ग बन सकती है। पत्नी को धार्मिक होना चाहिए व धर्म के अनुसार ही आचरण करना चाहिए। घर को एक मन्दिर के समान बना देना चाहिए। उसे माता सीता की तरह बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

पुत्र के कर्त्तव्य- पुत्र को हमेशा अपने माता-पिता की आज्ञानुसार ही कार्य करना चाहिए क्योंकि संसार में परमात्मा के बाद माता-पिता ही हैं जो उसका भला चाहते हैं। माता-पिता सदैव अपने पुत्र को कामयाब व अच्छा इंसान बनाना चाहते हैं। पुत्र को अपने चरित्र पर पिशेष ध्यान देना चाहिए। चरित्रहीन व्यक्ति जीवन में कभी कुछ नहीं कर सकता। उससे कोई बात करना भी पसन्द नहीं करेगा। वह कोई भी ऐसा कार्य न करे जो वह अपने माता-पिता के सामने ना कर सके। गलत संगत व नशों से दूर ही रहना चाहिए। बचपन से ही भक्ति का पौधा लगा देना चाहिए व आयु के साथ-साथ भक्ति भाव बढ़ाते रहना चाहिए। हर कार्य करने से पहले ये अवश्य सोचें कि इससे मेरे माता-पिता व परमात्मा खुश होंगे या नहीं। यदि

उन्हें खुशी मिले तो ही वह कार्य करे। अपने माता-पिता व परिवार में भक्ति भाव बढ़ाएं। उसे श्रवण कुमार की तरह बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

पुत्री के कर्त्तव्य- एक पुत्री का जीवन संघर्ष से भरा होता है। उसे शादी से पहले अपने माता-पिता का ध्यान रखना होता है व शादी के बाद पति व सास-ससुर का। उसे शान्त स्वभाव से सबके प्रति अपना फर्ज पूरा करना चाहिए तथा प्रेम से घर को स्वर्ग बना देना चाहिए।

मित्र के कर्त्तव्य- मित्रता हो तो श्रीकृष्ण व श्री सुदामा जैसी। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने सुदामा को बिना मांगे ही सब कुछ दे दिया व उसकी सहायता की उसी प्रकार हमें भी निःस्वार्थ भाव से मित्र के दुःख दूर करने चाहिए।भाई के कर्त्तव्य- भाइयों को श्रीराम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न की तरह रहना चाहिए। एक दूसरे के लिए सब कुछ त्याग कर देना चाहिए। एक-दूसरे को गलत काम से रोकना चाहिए व सही मार्ग पर चलाना चाहिए। आपस में कभी भी द्वेष नहीं रखना चाहिए। हर मुसीबत में साथ देना चाहिए। भक्ति मार्ग पर मिलकर अग्रसर होना चाहिए।

प्रभु कृपा से ये मेरे निजी विचार हैं। जिन्हें पसन्द आए ऐसा बनकर देखें घर स्वर्ग बन जाएगा। जिन्हें पसन्द ना आए। मुझे आज्ञानी समझकर माफ करना।

हरि ॐ तत्सत, हरि ॐ तत्सत, हरि ॐ तत्सत

ॐ नमो भगवते वासुदेवायः।

❒ **सुरेन्द्र पूनिया**
सन्धु गन हाऊस, जि. फतेहाबाद
मो. 9466005429

नशा और नौजवान

बिश्नोई नौजवानों की दुर्गति देख कर मजबूरन मुझे कलम उड़ानी पड़ी है ताकि नशा मुक्ति का ये संदेश समाज के व्यक्तियों, समाज सुधारकों व धर्म प्रचारकों तक पहुंचा सकूं। अब वक्त आ गया है जब हमें युद्ध स्तर पर कार्य करके बिश्नोई नौजवानों के चारित्रक पतन को रोकना है वर्ना शीघ्र ही अगर हम कुछ न कर पाये तो पथभ्रष्ट ये बिश्नोई युवा हम सब बिश्नोइयों की और जीवरक्षा और पेड़ पौधों की रक्षा करते हुए बलिदान देने वाले हमारे भाइयों की छवि को धूमिल कर देंगे। गुरु जम्भेश्वर जी भगवान द्वारा स्थापित इस सम्प्रदाय को ये नशाखोर कंलकित तो करते ही है इसके पतन का कारण भी बन जाएंगे, अगर शुरू से हम हमारे समाज पर नजर डालें तो पहले के व्यक्तियों में अशिक्षा की वजह से या कार्य शैली की वजह से एक प्रतिशत व्यक्ति नशा करते थे, उन्हें भी समाज में हर जगह इसकी वजह से लज्जित और दण्डित होना पड़ता था किंतु आज के परिपेक्ष्य में देखा जाए तो नौजवानों में लगभग 20 से 25 प्रतिशत किसी न किसी नशे के आदी है जैसे शराब, सिगरेट, तम्बाकू, स्मैक इत्यादि जबकि गुरु महाराज ने हमें इन सब चीजों से दूर रहने को कहा था। कुछ युवा अपने आप को आधुनिक दिखाने के लिए सिगरेट और शराब को तो अपना -'स्टैटस सिंबल' मानने लगे है। उनकी नजर में शायद 29 नियमों का कोई मूल्य नहीं रह गया है। ये नशे की लत ही व्यभिचार फैलाती है। शराब व स्मैक के आदी युवा विभिन्न अपराधों में लिप्त हो जाते हैं जैसे चोरी, हत्या, लूटपाट इत्यादि जहां फिर से 29 नियमों की अवहेलना की जाती है। नशे से युवाओं का नैतिक कर्त्तव्यों से विमुख हो जाना भी आम बात हो गई है जैसे माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं करना बड़ो का आदर न करना।

यहां मेरे कहने का तात्पर्य यह कतई नहीं है कि सभी बिश्नोई युवा पथभ्रष्ट हो गए हैं। मुझे गर्व है अपने उन बिश्नोई भाई बहनों पर भी जो एक से एक स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित होकर, या विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर अपने माता-पिता परिवार के साथ साथ बिश्नोई समाज के सिर को गौरव से ऊँचा करते हैं।

अतः अंत में मैं यही कहना चाहूंगा और आप सबसे आह्वान करना चाहूंगा कि आओ इस नशे रूपी कैन्सर से नौजवानों को बचाने व मुक्ति दिलाने के लिए हम सब अपने स्तर पर कुछ न कुछ जरूर करें जिससे कि हाल ही के दिनों में बिश्नोई समाज की प्रतिष्ठा को जो ठेस पहुंची है उसकी क्षतिपूर्ति हो सके और समाज और देश के भविष्य में नौजवान पुनः सही रास्ते पर लौट कर अपने समाज के और देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सके।

खैराज बिश्नोई (सोऊ)
क्लर्क, भारतीय वायु सेना
विद्या नगर, जोधपुर (राजस्थान)
मो. 9461852129

वैदिक संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण

वैदिक संस्कृति में पर्यावरण की पवित्रता का सम्बन्ध धर्माचरण से होने के कारण, वह अधर्म के विनाश की कामना करता है। प्राणी मात्र से सद्‌भावना हो, ऐसा प्रयत्न करता हुआ, विश्व के विनाश की नहीं, कल्याण की कामना करता है। ऐसे सभी दुष्कर्मों से दूर रहने का प्रयत्न करता है, जो जड़ और चेतन सबसे विनाश के कारण हो सकते हैं। हमारी परम्पराएं एवं नियम इसके प्रमाण हैं।

वैदिक काल से आज तक भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों का यदि अवलोकन करें, तो उसकी अहिंसावादी विशिष्ट विशेषता सदैव दृष्टिगोचर होती है। वैदिक काल के ग्रंथों में 'मा हिंस्यात् सर्वभूतानि' अर्थात् किसी भी जीव को मत मारो, यह आदेश था। अहिंसा से ही हम संस्कृतियों में परस्पर समन्वय करने में सफल हो सके हैं। सहिष्णुता एवं उदारता से ही हम अपने शाश्वत मूल्यों को बनाये रखने में सफल हो सकते हैं। दूसरों का अनिष्ट सोचना ही हिंसा नहीं, बल्कि दूसरों के विचारो को ठुकरा देना, दूसरों के सम्मान को ठेस पहुंचाना भी हिंसा की श्रेणी में आता है। यही कारण है कि इस मूलभूत आधार को अपनाकर, हम अमृत बरसाने में विश्वास करते हैं, जबकि यूरोप और अन्य देश विष उगल रहे हैं। अत: हम सहिष्णुता, उदारता और अहिंसा आदि सिद्धान्तों को अपनाकर अनेकता में एकता को समेटे हुए हैं और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, संस्कृति में संतुलन बनाये हुए हैं। परन्तु आज हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सम्पूर्ण समाज को हानि पहुंचाने में कोई हिचकिचाहट नहीं करते और अपने आर्थिक लाभ को प्राप्त करने के लिए प्रकृति का अत्याधिक दोहन करने में किसी भी प्रकार संकोच नहीं करते हैं। यही हमारे पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण है। हम प्रारम्भ से ही प्रकृति-पूजक रहे हैं, जिससे अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, उषा, वृक्ष विशिष्ट रहे हैं।

वैदिक आर्यों ने सदैव प्रकृति की पूजा की है। द्रविड़ों ने भी प्राकृतिक उपादानों को सदैव आदर की दृष्टि से देखा। वे पुत्र, पुष्प, फल, चन्दन को पवित्र मानते हैं। द्राविड़ों की मान्यता है कि हवन से प्रदूषण समाप्त होता है तथा पुष्प, चन्दन की सुगंध से वातावरण सुरभित होता है। आर्यों ने भी हवन, यज्ञ आदि की महत्ता को स्वीकारा है। भारतीय शास्त्रों में, विशेषत: उपनिषदों में, पृथ्वी को परमात्मा का शरीर, स्वर्ग को मस्तिष्क सूर्य और चन्द्रमा को आँखें तथा आकाश को मन माना है। उपनिषदों के अनुसार यदि पृथ्वी परमात्मा का शरीर है तो पेड़-पौधों को काटना एवं जलस्त्रोतों को प्रदूषित करना, परमात्मा को आघात पहुंचाना है। इसी प्रकार आकाश में विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान करने का मतलब परमात्मा के मन को मलिन करना है। आर्यों की मान्यता रही है कि वृक्ष और जलस्रोत सदैव पूजनीय है। वे तुलसी, वट, पीपल बेल, वृक्षों को पवित्र मानते थे। परन्तु आज आर्यों की संतान कहलाने वाले हम इन पेड़-पौधों को बेरहमी से काट रहे हैं। नदियों को कल-कारखानों के अपशिष्ट पदार्थों से प्रदूषित कर रहे हैं। मृतकों की अस्थियाँ व शवों को बहा रहे हैं जिससे पवित्र नदियों का जल प्रदूषित कर रहे हैं। वृक्षों को काटकर हिमालय को बांझ बनाया जा रहा है। वनों को काटा जा रहा है तथा कल-कारखानों के धुएं से वायुमण्डल को प्रदूषित किया जा रहा है। ऐसा हम अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए कर रहे हैं, परन्तु ऐसा करने के फलस्वरूप प्रदूषित पर्यावरण के कारण मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न किया जा रहा है। इस प्रकार हम मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न किया जा रहा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विश्व की प्राचीन आर्य सभ्यता ने भी प्रकृति को पूजनीय माना तथा भारतीय प्राचीन शास्त्रों ने भी आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल को जीवन के अस्तित्व का प्रमुख स्त्रोत माना है। इनको नष्ट करने व अत्यधिक शोषित करने से केवल पर्यावरण ही दूषित नहीं होगा, वरना मानव समाज का जीवित रहना भी कष्टप्रद हो जायेगा।

वैदिक काल में चित्रों का चलन था। उस समय इन्द्र की मूर्तियाँ विक्रय हेतु उपलब्ध थीं। कृषि व्यवसाय एवं पशुपालन के कारण लोग गांवों व छोटी ढाणियों में रहते थे। गांवों में लकड़ी की बनी झोंपड़ियाँ हुआ करती थी। दीवारों पर गोबर से बने गारे का उपयोग प्रचुर मात्रा में होता था। मुख्य द्वार पर तोरण बनाने की परम्पराएं रही हैं। आज भी आदिवासियों व राजस्थान के रेगिस्तान की

दूरस्थ ढाणियों में ऐसी व्यवस्था उपलब्ध है, परन्तु सामान्यत: तोरण व झोपड़ियाँ लगभग समाप्त-सी हो गई हैं, लेकिन इन भारतीय स्थापत्य कला के अवशेष आज भी जापान, चीन व रूस के ग्रामीण इलाकों में दृष्टिगत होते हैं। हमारी वैदिक प्रार्थना, शांति पाठ एवं स्वस्तिवाचन में औषधि, वनस्पति, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश सभी की शांति हेतु विनती की जाती है। यह सब पर्यावरण शुद्धि से ही सम्भव है। इसी शुद्धि हेतु हमारे पूर्वजों ने दैनिक यज्ञों की परम्परा डाली। विशिष्ट अवसरों पर इन यज्ञों के विशाल स्वरूप का संयोजन हमारी संस्कृति की पर्यावरण संरक्षण की वह दीर्घकालीन परम्परा है, जिसका प्रभाव आज भी जन-जीवन पर है। परन्तु ऐसा जीवन आज के इन वैज्ञानिक एवं आधुनिक समाज में रूढ़िवादी एवं पिछड़ा हुआ ही माना जाता है।

आज पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें अपने अतीत की ओर दृष्टि डालनी होगी। अपने पूर्वजों के समान अग्निहोत्र, आहार-विहार, रहन-सहन और जीवन पद्धति को अपनाना होगा, अन्यथा यह असुरक्षित एवं प्रदूषित पर्यावरण हमें निरन्तर विनाश के गर्त में ढकेलना ही होगा।

वेद एवं पर्यावरण-संरक्षण

पुरातत्त्व की दृष्टि से भारतीय धर्म और संस्कृति का विकसित रूप सर्वप्रथम सैन्धव सभ्यता में दिखाई देता है और साहित्य की दृष्टि से इसका परिपक्व रूप सर्वप्रथम वेदों में मिलता है। वेद सत्य हैं, सत्य काल से परे हैं, अत: वेद शाश्वत हैं। वेद शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ ज्ञान हुआ। चिन्तन, दर्शन और साक्षात्कार के क्षणों में जो ज्ञान रश्मियाँ, ऋषियों के मन पटल पर अवतीर्ण हुई, वे शब्दों और प्रतीकों के माध्यम से वेद के मंत्रों और सूक्तों के रूप में प्रकट हुईं। यह दिव्य ज्ञान कई परिभाषाओं और परिकल्पनाओं से युक्त होकर एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पल्लवित हुआ और उसके अनुरूप एक विशेष धार्मिक दर्शन, आचार-संहिता और जीवनशैली का निर्माण हुआ। इस प्रकार वेद हमारी भारतीय संस्कृति के विकास की गतिशीलता के सूचक हैं। विश्व की प्राचीनतम मानव सभ्यता के युग से आधुनिक सभ्यता, संस्कृति एवं वैज्ञानिक आविष्कारों का मुख्यत: आधार भूमण्डल में स्थिति प्रमुख चार अवयव-जल, अग्नि, वायु और मृदा हैं। इन चारों वस्तुओं के विशद् ज्ञान को वेद कहते हैं।

वेद चार हैं-ऋग्वेद, यजुर्वेद, समावेद और अथर्ववेद और इनकी चार अलग-अलग संहिताएँ हैं। विभिन्न प्रकार के बिखरे हुए वेद मंत्रों का संकलन करने का कार्य, ऋषियों ने सम्पन्न कर, उन्हें संहिताओं में विभाजित किया। भू-मण्डल में स्थित चार वस्तुओं में से जल के सम्बन्ध में समावेद में वर्णन किया गया है। सामवेद में जल के रूपान्तरण, कार्य तथा गुणों को ज्ञान तथ ऋग्वेद में अग्नि के बारे में ज्ञान उपलब्ध है।

यजुर्वेद में आयु के विभिन्न प्रकार एवं कार्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार अथर्ववेद में मृदा के विभिन्न गुणों से अवगत हो सकते हैं, इसी कारण जल, अग्नि, वायु और मृदा को क्रमश: सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद कहा जाता है। अग्नि, जल, वायु और मृदा के क्रमश: 21,000,101 एवं 09 मुख्य विभाग होते हैं। अत: इन सब का योग 1, 131 के बराबर है। वेदों की 1, 131 शाखाएं हैं जो सामवदे, ऋग्वेद, अयुर्वेद एवं अथर्ववेद में क्रमश: 1,000, 21, 101, 09 हैं। अजु का अर्थ वायु है और अथर्व का अर्थ मिट्टी है। प्रत्येक वेद में जल, अग्नि, वायु और मिट्टी पारिभाषिक शब्द हैं और उनसे केवल हमारे इन जल, अग्नि, वायु और मिट्टी का ही तात्पर्य नहीं है। वरन् इन चारों पदार्थों के आदि स्वरूप की अवयच अवस्था से लेकर स्थूलतम अवस्था तक जितने रूप, विभाग इत्यादि बनते हैं, वे सब वेद में निहित हैं। उदाहरणस्वरूप जल से वेद में घृत, मधु, सुरा, जल इत्यादि समस्त जलीय पदार्थों से अभिप्राय है और जल के सूक्ष्म कण जो वाष्प रूप में आकाश में स्थित हैं उनको भी वेद जल ही कह कर पुकारता है।

प्राचीन ऋषियों ने प्रकृति की आदि अवस्था से अन्त्य अवस्था तक पूर्णावलोकन कर, प्रत्येक देश में उन देशों की प्राकृतिक रचना को देखकर, इन शाखाओं का विस्तृत तथा क्रमवार प्रचार किया। उदाहरणस्वरूप उत्तर प्रदेश जल और वायु प्रधान होने से विन्ध्य पर्वत के ऊपर साम और यजुर्वेद का प्रचार हुआ और वायु प्रधान हुआ और विन्ध्य से नीचे दक्षिण देश अग्नि और भूमि प्रधान होने से ऋग्वेद तथा अथर्ववेद का प्रचार एवं प्रसार हुआ। इससे स्पष्ट है कि हमारे ऋषि-मुनियों को संसार का बहुत सूक्ष्म एवं विस्तृत ज्ञान था, तभी तो वे परिस्थिति-अनुकूल वेदों का प्रचार करने में सफल हो

सके। वेदों का अध्ययन प्राचीन काल में वेद की आज्ञानुसार (यजुर्वेद अ 26/15) ही पर्वतों के शिखर पर अथवा नदियों के संगम पर किया जाता था। ऋक् और अथर्ववेद का अध्ययन पर्वतों पर होता था, कारण कि पत्थर की उत्पत्ति अग्नि से है और पर्वतों पर सूर्य की रश्मि द्वारा पत्थर पर जो प्रभाव पड़ता है वह भी जाना जा सकता है। इसे अग्नि तथा मिट्टी का ज्ञान विशेष रूप से वहां भी जाना जा सकता है। साम और यजु का अध्ययन नदियों के संगम पर हुआ करता था। इसका कारण भी स्पष्ट है कि दो नदियों के जल-संगम से विभिन्न गुणों एवं शक्तियों की सम्भावनाओं का भी अवलोकन हो जाता है। वायु और जल के संघर्ष से नवीन शक्ति के प्रकट होने की सम्भावनाएं होती थी, उसका भी प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन सरलता एवं सुगमता से किया जा सकता है।

यजुर्वेद के वर्णनानुसार एक ही विद्युत के दीप से उत्तरी ध्रुव के नीचे बिन्दु सरोवर के ऊपर रखा जाता था जो सम्पूर्ण एशिया को प्रकाश देता था। ऋग्वेद के अनुसार उनका सामाजिक जीवन भी इतना पवित्र तथा उच्च था कि सदैव उनका उद्देश्य यही रहता था कि सभी देशों में शांति स्थापित रहे।

यजुर्वेद आख्यान 17/20 में लिखा है कि वैदिक मंत्रों के आधार पर मन द्वारा ही सृष्टि की उत्पत्ति के क्रम का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इन आधुनिक काल में वैज्ञानिक सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में तथ्यात्मक तर्क देने में असफल हैं, कि ईश्वर ने इतने बड़े संसार की रचना कैसे की जब सृष्टि के आदि में कुछ भी नहीं था तो भला उसका वर्णन कौन कर सकता है? उस काल में न देवता थे और न ही मनुष्य फिर मन और प्राण ही सूक्ष्म अवस्था में उस काल में वहां उपस्थित थे। अत: वेद ने उसी मन की ओर संकेत कर हमें सृष्टि विज्ञान को सही ढंग से जानने का एक मात्र यंत्र दिया है तो वह मन ही है। (ऋग्वेद अ 20 सू 164 स 4 से अनुसार)

ऋग्वेद अ 2 अ 20 म 13 के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पांच चक्रों स्वयंभू, परमेमिष्ठ, सूर्य, पृथ्वी और चन्द्र पर आधारित है। प्रत्येक चक्र सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर प्रलय तक कभी नहीं टूटता। इन्हीं परमेष्ठि सूर्य, पृथ्वी एवं चन्द्र के स्वयंभू मण्डल में विलीन हो जाने से प्रलय होती है। जिन शक्तियों और नियमों के आधार पर पांचों चक्र अपने-अपने भार को धारण करते हैं उन्हें सनातन धर्म कहते हैं, क्योंकि ये आदि से अन्त तक धारण किया रहता है। धर्म वही है, जो प्रकृति के अनुकूल हो और पाप वहीं है, जो प्रकृति के विरुद्ध हो। आज विश्व के बुद्धिजीवी, विद्वान, विचारक एवं दार्शनिक इन तथ्य से सहमत हैं कि वे ज्ञान का प्रकाश पुञ्ज है, जिनसे ऐसे अखण्ड, अनन्त, अपरिमित ज्ञान का बोध होता है, जिसको सृष्टि के ऋषियों-मुनियों ने अपनाया था। वेद-शास्त्र के विद्वान, वेद को, सृष्टि विज्ञान का सम्पूर्ण एवं परिपूर्ण ग्रन्थ मानते हैं। मनुष्य की उन्नति, प्रगति, सभ्यता एवं संस्कृति तथा पर्यावरण संरक्षण का जो विकास हुआ है या भविष्य में होगा वह वेदों के अध्ययन एवं अनुसंधान से ही सम्भव है।

डॉ. बी.बी.एस. कपूर
स्नातकोतर, वनस्पति विज्ञान विभाग
राजकीय डूंगर महाविद्यालय (बीकानेर)

दान सुपाते बीज सुखेते

पाठकों जैसा कि आपने सबदवाणी से पढ़ा होगा कि गुरु जंभेश्वर भगवान ने हमें अपनी नेक कमाई में से दसवां हिस्सा दान करने को कहा था और हमें इसी परम्परा को जिन्दा रखते हुए दान जरूर करना चाहिए और आप के समय में समाज की एकमात्र वरिष्ठ पत्रिका "अमर ज्योति" जो कि लागत से भी काफी कम मूल्य में समाज की सेवा कर रही है। अत: हमें अमर ज्योति पत्रिका को दान देकर अपने आप को धन्य करना चाहिए और कुछ सज्जन जिन्होंने अपनी नेक कमाई में से दान दिया है -

1. 11000/- सुरेन्द्र पाल पुत्र श्री ठाकर रामजी बागड़िया दुतारावाली त. अबोहर जिला फाजिल्का।
2. 11000/- जीवन राम जी गोदारा (अति. पुलिस अधीक्षक), ग्रा.पो. बज्जू, त. कोलायत, जिला बीकानेर।
3. 11000/- श्री माखन लाल पुत्र श्री अमीलाल जी काकड़ (D.E.T.C) निवासी सारंगपुर हाल निवासी, म. नं. 445, पी.एल.ए, हिसार। अपने सुपुत्र विकासी बिश्नोई की शादी के मौके पर।

सभी ने अपने घर विवाह के शुभ अवसर पर यह दान दिया है। बिश्नोई सभा हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार इन दान दाताओं का धन्यवाद करती है।

भय से मुक्ति

विश्व में कोई भी ऐसा प्राणी अथवा जीव नहीं है जिसको मृत्यु का भय न हो लेकिन मानव बुद्धिजीवी होने के कारण वह मृत्यु के भय से मुक्त होना चाहता है यह सत्य भी है कि एक मानव ही ऐसा प्राणी है जो भय से मुक्त हो सकता है। ऐसे अनेकों उदाहरण है कि अनेक ऋषि-मुनियों ने भय मुक्ति पाकर स्वयं निर्वाण प्राप्त किया है।

शब्द 23वें में गुरु जम्भोजी ने कहा है- "साहिल्या हुआ मरण भय भागा, गाफिल मरणे घणा डरे"। व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होने पर मृत्यु भय समाप्त हो जाता है यदि कोई व्यक्ति ज्ञानी होने का दावा करे और मृत्यु भय खाता हो तो समझ ले वह ज्ञानी नहीं है क्योंकि मरने से डरना तो अज्ञान का लक्षण है।

पंच महाभूतों, पृथ्वी, जल, पावक, गगन और समीर से भय करना जीवमात्र की नियति है किंतु जब व्यक्ति को अपनी छाया से ही भय लगने लगे तब यह उसकी अज्ञानता कही जाएगी। देखा जाय तो भय का आधार संशय, कल्पना आशंका आदि मनो विकार ही होते हैं। मनोविज्ञान का मानना है कि भय व्यक्ति की मानसिक दुर्बलता का द्योतक है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं जब मानव अपने लक्ष्य की सफलता में संशय या आशंका से ग्रस्त हो जाता है तब भय का जन्म होता है। तुलसीदास के (मानस) में अंगद के मन में समुद्र पार करने में कोई शंका नहीं थी लेकिन वापिस आने में उसने शंका व्यक्त की, यह शंका ही भय को उत्पन्न करती है। भय अनेक बुराइयों और दुखों का कारण होता है वह शक्तिशाली मनुष्य को शक्तिहीन बना देता है।

भय से मुक्त होने के लिए वह नाना प्रकार के उपाय करता रहता है। भय से मुक्ति पाने के लिए वह परमात्मा को भी जोड़ लेता है और किसी चमत्कार की आशा से धर्मस्थलों के चक्कर भी लगाता है। प्रायः बहुत से भय निर्मूल ही साबित होते हैं, फिर भी मानसिक दबावों में रहना पड़ता है। भय का मूल कारण है उसकी अज्ञानता। इस अज्ञानता और मन की शंकाओं को कोई सतगुरु ही दूर कर सकता है। सबदवाणी में गुरु जाम्भोजी ने कहा है- **"सतगुरु मिलियो सत पंथ बतायो भ्रांत चुकाई। मरणे बहुत उपकार करे"**

जिसे सतगुरु मिल जाता है वह उसकी समस्त शंकाओं का समाधान करते हुए उसे सत्य के मार्ग पर ले जाता है जिसके कारण उसकी सभी शंकाएं और मन के भय दूर हो जाते है यही नहीं मरने के उपरान्त, बाद में, दूसरे जन्म में भी संदेह मुक्त ज्ञान लाभ जीवात्मा को भी मिलता है। यदि भय से मुक्ति पाना है तो गुरु की शरण में अवश्य जाना ही पड़ेगा। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो जीवन पर्यन्त भय युक्त एवं शंकालु जीवन ही जियेगा तथा अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग उन भौतिक नाशवान पदार्थों को एकत्र करने में नष्ट कर देगा।

अतः भय मुक्ति के लिए संतों, ज्ञानियों के सान्निध्य में रहकर ज्ञान की चर्चा-परिचर्चा करके भय से मुक्ति मिल सकती है। साधु संग अत्यन्त दुर्लभ है। बिना साधु संग ज्ञान नहीं और जब तक हरि कृपा नहीं तब तक संत का मिलन नहीं हो सकता। संत तुलसीदास जी के शब्दों में **"बिनु सत्संग विवेक न होई, बिनु हरि कृपा मिलै न सोई।"**

कठिन परिस्थितियों में कभी घबराना नहीं चाहिए अर्थात भय नहीं खाना चाहिए उनका डट कर मुकाबला करना चाहिए। इसी के साथ कुछ पंक्तियां है-

"मुसीबत की घड़ियों में तुम मुस्कुराओ
भय मुक्त हो कर धीरज बंधाओ
धीरज धर के पग आगे बढ़ाओ
कर्त्तव्य पथ पर रोवो न रूलाओ "

❐ जय प्रकाश बिश्नोई (से.नि.)
चाऊ की बस्ती, मुरादाबाद
मो. 9250035099

कहाँ खो गए वो दिन

कहां खो गए वो दिन ! जब निस्वार्थ, भोले-भाले, सीधे लोग इस समाज में निवास करते थे। जहां भाईचारे और प्रेम की धारा बहती थी। ना किसी से ईर्ष्या, ना ही छल-कपट, वो माटी के चुल्हे, सावन के झूले, सब कुछ याद आता है। देर तक गली में बच्चों का खेलना, माटी की वो सोंधी खुशबू,न जाने कहा खो गई।

सब खो गया है इस भयानक चक्र में। जी हां सब कुछ बदल गया है। मौसम की तरह वक्त, इंसान, पहले जो लोग छल-कपट का नाम तक नहीं जानते थे, आज वही इंसान पूरी तरह बेइमानी के रंग में रंगा हुआ है। आज इंसान कर्म करने से पहले फल की इच्छा रखता है।

मानती हूँ कि आप की इस तेज दुनिया में इंटरनेट बहुत जरूरी है, परन्तु इतना भी नहीं की अपनी वास्तविकता ही भूल जाएं। मनुष्य ने आज अपने स्वार्थ में जीवन के अनमोल क्षणों को ही खो दिया। आज इंसन के पास अपने बूढ़े माँ-बाप के लिए समय नहीं है, क्योंकि उसका वो समय इंटरनेट के एपस व साइटों में व्यस्त होता है जैसे Facebook, Whatsapp, Twiter आदि।

आज 4-4 बेटे होते हुए भी माँ-बाप वृद्धाश्रम में रहते हैं। एक लड़की घर से बाहर नहीं निकल सकती, आखिर क्यूं और कब तक ? क्या यही मानसिकता है आज हमारे समाज की। समाज खुश है कि हम आगे बढ़ रहे हैं परन्तु साथ ही हमारा नैतिक पतन, आदर्शों व संस्कार भी पानी में डूबते नजर आ रहे हैं।

अत: मेरा सभी युवाओं से यही निवदेन है कि इस इंटरनेट एव लोक प्रदर्शन की दुनिया से बाहर निकलकर समाज में सकारात्मक सोच लाएं और एक बार फिर से अपने सस्कार, आदर्शों, प्रेम, आदि का एक पौधा लगाएं, जिसकी छाया में सारा समाज खुश होगा।

"कुछ कर गुजरने के लिए, मौसम नहीं मन चाहिए।
साधन सभी जुटा जाएंगे, संकल्प का धन चाहिए"॥

उजाला बिश्नोई
M.A. English सदलपुर, मण्डी आदमपुर, जिला हिसार

एक आस

पेड़ों से पूछा मैंने........
यू ही एक रोज,
क्यूं नहीं है तुम में अब वो पहले जैसा जोश ?
क्यों नहीं बैठ कर तुम्हारे नीचे,
नहीं आती वो पहले जैसी बात ?
जब शाम ढला करती थी,
न जाने कब हो जाती थी रात ?
क्यों नहीं कर पाता, मैं फिर से तुमसे बात ?
मस्ती भी अब छुट गई, जब होती है बरसात,
डर लगता है अब चढ़ते हुए कोई भी हो साख,
घबरा कर दिल ये कहता है कि, हो जाऊँगी में राख,
अगर तुम्हें बनाना ही था, ऐसा निर्दय कठोर,
तो अच्छा है चले जाओ, इस धरा को छोड़,
तुमसे है परेशान यहां पर भी सारे इंसान,
रहने की जगह कम है, और तुम बन रहे हो भगवान,
सुन कर मेरी व्याख्या को मुझसे, पेड़ थोड़ा मुस्कुराया,
फिर प्यास से हंसकर मुझ पर, हवा का झोंका एक लहराया,
बोला धीमे से मेरे कान में, सुनों मेरे बदलने का वो राज,
जिसको सुनकर हँसेगा सारा, निर्दय मानव समाज,
जोश मेरा वो पहले जैस खोय यही हैं देखो,
'प्रदूषण' के काले घुएं से, बिखरे रंग अनेको,
मैं क्या करता धीरे-धीरे, कच्ची हो गई मेरी साख,
नाम का पेड़ बनकर रह गय अब, रखता हूँ,
मौसम सजने की एक आज।

प्रदीप भादू खैरमपुर
मो. 86076-02809

समाज में बढ़ता अन्धविश्वास

सज्जनो आज हमारे समाज में अनेक कुरीतियां मौजूद हैं जो लम्बे समय से समाज में व्याप्त हैं उन्हें भी हम सबको मिलकर समय पर मिटाने की आवश्यकता है, परन्तु वर्तमान समय में हमारे समाज में मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान में ज्यादातर बिश्नोई बन्धु भोपों और तान्त्रिकों के जाल में फंस रहे हैं। यह बात चिंतनीय है कि जिस बिश्नोई समाज को लोग आर्दश समाज मानते हैं उस समाज के लोग उन पाखंडियों की शरण में कैसे जा सकते हैं। ये पाखंडी अपने स्वार्थ के लिए समाज के भोले-भाले और अज्ञानी लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहें तथा गुरु महाराज के बताये मार्ग से विचलित कर रहे हैं। आज इस विज्ञान के युग में तथा गुरु महाराज द्वारा बताये गए 120 शब्दों में इन पाखंडियों का गुरु महाराज ने घोर विरोध किया था फिर भी न जाने समाज के लोग उन पर कैसे विश्वास करके अपना समय, स्वास्थ्य और धन व्यर्थ में ही गंवा रहे हैं। वर्तमान समय में पश्चिमी राजस्थान में बिश्नोई बन्धुओं ने भोमियों की पूजा प्रारम्भ कर दी हैं जिसका गुरु महाराज ने मना किया है और कहा है कि जो व्यक्ति खुद अधोगति को प्राप्त हैं वह व्यक्ति आपका क्या भला करेगा, लेकिन फिर भी आज समाज में उनकी संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

सज्जनो अधिक दु:ख तो तब होता है जब दूसरे समाज के साथ हमारे समाज के कुछ स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ के लिए समाज के भोले-भाले लोगों को अपने चंगुल में फंसा रहे हैं। मित्रो मुझे आश्चर्य तब हुआ जब एक भोपे को पुलिस पकड़कर ले गई तथा उसके कारनामे मीडिया ने भी छापे फिर भी उसके अनुशरण करने वालों की कमी नहीं हुई। प्रश्न यह उठता है कि आखिर क्या जरूरत पड़ी उन्हें इन पाखंडियों के पास जाने की ? वजह साफ है कि आज हमारे बिश्नोई बंधुओ ने गुरु महाराज के बताये नियमों की जगह अपने ही नियम अलग से बना लिए हैं तथा उनकी पालना कर रहे हैं। आज हमारे कई बिश्नोई बंधुओं के घरों में 30 दिनों के सूतक की जगह अपने कामकाज की सहूलियत को देखकर उसको कम कर दिया है। अधिकतर घरों में पांच दिन के ऋतुवंती की जगह तीन दिन कर दिया है। कुछ लोग तो इसकी पालना की आवश्यकता ही नहीं समझते हैं। ज्यादातर लोग स्नान करने से पहले ही भोजन करना उचित समझते हैं। नशे की बात करें तो बुजुर्ग वर्ग भी इसमें पीछे नहीं हैं। उन बुजुर्गों से मेरा कहना है कि यदि आप नशा करते हैं तो अपने पुत्रों तथा आने वाली पीढ़ियों से आप कोई अपेक्षा मत करना।

सज्जनो जब तक हम गुरु महाराज के बताये गए पथ पर नहीं चलेंगे तब तक हमें इन सब समस्याओं का सामना करना ही पड़ेगा जिनकी वजह से हम इन पाखण्डियों की शरण में जा रहे हैं। कुछ दिनों पहले मुम्बई के पास एक जाने-माने चिकित्सक की इन पाखण्डियों ने मिलकर हत्या कर दी। उसका कसूर सिर्फ इतना था कि उसने अपना चिकित्सा का पेशा छोड़कर लोगों को अन्धविश्वास के प्रति जागरूक करने का अभियान चल रखा था जिससे इन पाखण्डियों की दुकानें बंद हो रही थी जो उन्हें रास नहीं आया और एक दिन उन सब ने मिलकर उस महान समाजसेवक को मौत के घाट उतार दिया। प्रश्न यह उठता है आखिर यह लोग सही होते तो उस समाजसेवक चिकित्सक को उन्हे मारने की क्या आवश्यकता पड़ती ? विचारणीय बात यह भी है कि आखिर उस चिकित्सक को अपना पेशा छोड़कर लोगों को जागरूक करने की क्यों जरूरत महसूस हुई। कुछ दिनों तक इस पर कानून बनाने की बहस चली लेकिन हमारे वर्तमान के लोकनायकों के पास ऐसा कामों के लिए वक्त ही कहां हैं और वह बहस ठण्डे बस्ते में चली गई। मित्रो यदि मेरे विचारों से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंची है तो मैं आपसे माफी मांगता हूँ तथा मैं उन लोगों के दु:ख दर्द समझ सकता हूँ कि वे किन परिस्थितियों में उनकी शरण में जाते हैं। मैं गुरु महाराज से आपके दु:ख दर्द के निवारण की मनोकामना करता हूँ तथा आगे भी आपके जीवन में कोई विपदा ना आए इसकी कामना करता हूँ। लेकिन मित्रो आपके मर्ज की दवा वे पाखण्डी नहीं हैं। आपको समय रहते हुए किसी अच्छे चिकित्सक से परामर्श लेने की तथा 29 नियमों की पालना की अधिक आवश्यकता है। बिश्नोई संतों से भी मेरा अनुरोध है कि वे समय-समय पर बिश्नोइयों के गांवों में जाकर जम्भवाणी का पाठ करके भटके हुए उन बिश्नोई भाई-बहनों को बिश्नोई पथ पर लाने का पुण्य का काम करें।

❒ **सुरेश चन्द्र पुत्र श्री बाबुराम बिश्नोई**
जांगुवास, लुणी, जोधपुर। मो.: 09829643089

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ बधाई सन्देश ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

राजाराम नैन सुपुत्र श्री हेतराम नैन, निवासी गांव सीसवाल, जिला हिसार की पदौन्नति Excise & Taxation Officer के पद से Deputy Excise & Taxation Commissioner के पद पर हुई है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

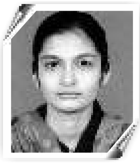

दीपिका बिश्नोई सुपुत्री श्री कृष्ण कुमार बिश्नोई, निवासी मनफूल नगर, हिसार ने GATE, 2015 की परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

महीपाल सिंह बिश्नोई सुपुत्र श्री किशनाराम गोदारा, निवासी सेड़ीया, राजस्थान ने GATE, 2015 की परीक्षा में पूरे भारत में नौवां स्थान प्राप्त किया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

विनोद कड़वासरा सुपुत्र श्री परीक्षित कड़वासरा, निवासी बड़ोपल, जिला फतेहाबाद को वन्य जीव एवं पर्यावरण क्षेत्र में सराहनीय प्रयास करने के लिए My FM Radio द्वारा वर्ष 2014-15 के लिए 'जियो दिल से' राष्ट्रीय अवार्ड दिया गया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

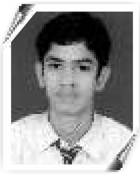

सुमित भादू सुपुत्र श्री भाल सिंह पौत्र, निवासी बड़ोपल, फतेहाबाद ने A.I.P.M.T. की परीक्षा पास कर Dr. Rajendra Parsad Govt. Medical College, Kangra, Himachal Pradesh में MBBS में प्रवेश लिया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

दिव्या सुपुत्री श्री रामकुमार सिगड़, निवासी चौधरीवास, हिसार ने CBSE द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित खेल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

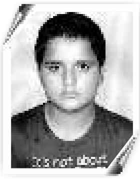

आदित्य सुपुत्र श्री रामकुमार सिगड़, निवासी चौधरीवास, हिसार ने CBSE द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हैंड बॉल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली टीम के सदस्य के रूप में भाग लिया। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

❖

राजकमल गोदारा सुपुत्री श्री राधेश्याम गोदारा, निवासी चौधरीवास, हिसार ने मार्च 2014 की दसवीं परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कन्हैया को पुकारा, है गौएं बेसहारा

आके देख नन्द लाल, गौओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।
आज भूखी है गौंए और प्यासी भी है,
ना पानी भी है और ना घास भी है।
दु:ख में जी भी रही बाकी स्वासं जो है,
ना सहारा कोई तेरी आस ही है।
एक बार आके तूं चारा-पानी डाल,
आके देख नन्द लाल, गौओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

ना कोई जंगल भी है, ना भूमि खाली भी है,
वहां उद्योग लगे, कहीं आबादी भी है।
कहीं रखवाले खड़े, वहां हरियाली भी है,
कहीं बाग खड़े, पर वहां माली भी है।
गौएं जहां भी जाये हैं, उन्हें मार ही पड़ी है।
ना इनके होली मने, ना दीवाली भी है,
एक बार बाजा तू बन के ग्वाल।
आके देश नन्द लाल, गौओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

गौएं खेतों में जाये, आस-पास जो है,
घायल हो लौट भी आए, तारों की बाड़ जो है।
वो घूमती फिरे घास तलाश जो है,
कुछ ना भी मिले, वो हताश भी है।
वो भूखी मरे, पेट खलास जो है,
तो कूड़ा-करकट ही खाये, जीने की आस जो है।
आज भूखी हैं गौएं, बिना तेरे गौपाल,
आके देख नन्द लाल, गौंओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

गौएं सर्दी भी सहती और गर्मी भी सहती,
बरसात के दिनों में कीचड़ में भी रहती।
शहर गांवों में घूमे ये घूमती ही रहती,
सड़कों के पास पुट-पाथ पे हैं सोती।
हर मौसम के गौएं बड़े दु:ख में ही रहती,
गौओं के ऊपर कोई छत जो ना होती।
बेसहारी गौओं का, ना कोई करता है ख्याल,
आके देख नन्द लाल, गौंओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

गौएं लूली भी हैं और कुछ लंगड़ी भी है,
वो ना चल भी सके, पैर तीनों पे खड़ी है।
सींग टूटे हुए, वो आपस में लड़ी है,
कुछ बूढ़ी भी हैं, कुछ बीमार पड़ी हैं।
कुछ घावों से भरी, वो उदास खड़ी हैं,
कुछ कमर से है, टूटी बेहाल पड़ी है।
ये किसके आगे रोयें, इनकी करे जो सम्भाल,
आके देख नन्द लाल, गौंओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

इससे आगे और भी सुन लो, आँखों में भी पानी भर लो,
करना है सो जल्दी कर लो, माँ अपनी की जान बचाओ।
गौओं पे भारी भीड़ पड़ी है, कैंटर-गाड़ी भरी खड़ी है,
राजस्थान, गुजरात से आती, हरियाणा, पजाब से जाती।
यू.पी., दिल्ली पहुंचाई जाती, दु:ख देकर है मारी जाती,
विदेशों तक पहुंचाई जाती, मोटी रकम कमाई जाती।
इन बेचारी गौओं का अब तू ही रखवाल,
आके देख नन्द लाल, गौंओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

कसाइयों संग मिल जाते, हिन्दू हो कर गौ कटाते,
ऐसा तो नहीं है धर्म हमारा, माँ को मार बने हत्यारा।
हम तो हैं उस धर्म को माने, राम-कृष्ण, गुरु जम्भ हो जाने,
गुरु नानक, कबीर माने, गौतम-बुद्ध, महावीर को जाने।
ना जाने वो कौन कसाई, हिन्दू है या है मुस्लाई।
सिख धर्मी या है ईसाई, गौ वध करते शर्म ना आई,
हत्या करके धन जो पाये, गुरु अपनों को दाग लगाये।
जो भी एसा कर्म कमाये, मिलेगी उनको सख्त सजायें,
कन्हैया एक बार दिखलादे, सुदर्शन-चक्र कर कमाल,
आके देख नन्द लाल, गौंओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

प्रभु आये या ना आये, पर भक्तों का रखे मान जी,
उनका तो बस ध्यान करो वो पूर्ण करेंगे काम जी।
खाली समय गौओं को दे दो, नहीं करो विश्राम जी,
तन-मन-धन से जोर लगा कर, शुरू करो अब काम जी।
एक-दो गौएं घर में पालो, जहां हो इनका इंतजाम जी,
घरमें ना कोई पाल सके तो, गौशाला है पुष्य धाम जी।
ऐसा तुम ना कर भी सको तो, थोड़ा भी दे दो दान जी,
या फिर गौ नहलादों, चारा खिलादो, करो मेहनत का दान जी।
जो गौशाला में सेवा करे, उसे मिल जाये बैकुण्ठ धाम जी,
गौ-सेवा करण का मांग रहा रमेश दास वरदान।
आके देख नन्द लाल, गौंओं का माड़ा हाल,
आजा बन के ग्वाल, तेरी गौओं को सम्भाल।

❒ **रामेश्वर दास गोदारा,**
बड़ोपल, फतेहाबाद, हरियाणा

परम तत्त्व की धुन

लगता है नजदीक ही है किनारा,
लहरों की हलचल कम होने लगी है।
यह जीवन धरोहर है परमात्मा की, सेवा सुरक्षा में इसको लगाया।
किया है वही जो उचित हमने सभी समझा, साथ बंधुओं का यथोचित निभाया।
पश्चाताप करने का कारण न ही कुछ असन्तोष की आग बुझने लगी है।
लगता है है नजदीक ही है किनारा लहरों की हलचल कम होने लगी है।
कोई काम करने को बाकी नहीं है।
विचारों में वह सन्तुलन भर गया है।
जिंदगी मौत में, व्यर्थ मतभेद करना,
आत्म सन्तोष से अपना मन भा गया है।
किसी से मुझे कुछ शिकायत नहीं है, मेरी साधना पूर्ण होने लगी है।
लगता है नजदीक ही है किनारा, लहरों की हलचल कम होने लगी है।
कठिन है बहुत, जन्म मानव का पाना,
मगर साधकों को यह मुश्किल नहीं है,
समस्याएं है तो समाधान भी हैं,
चलने वालों की दूर मंजिल नहीं है,
कोई शोक-रोक या चिंता नहीं है, परम तत्त्व की धुन समाने लगी है।
लगता है नजदीक ही है किनारा, लहरों की हलचल कम होने लगी है।

■ योगेन्द्रपाल सिंह बिश्नोई
एस. 5/123, कृष्णापुरी, लाइनपार,
मुरादाबाद, यू.पी.

पिता जीवन है

पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है,
पिता इस सृष्टि में,
जीवन की अभिव्यक्ति है,
पिता पालन है, पोषण है,
परिवार का अनुशासन है।
पिता अप्रदर्शित अंनत प्यार है,
पिता तो बच्चों का इंतजार है,
पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर उनका हाथ है,
पिता नहीं तो पूरा बचपन अनाथ है।
बड़े-बड़े विद्वानों से भी,
नहीं लिखी जा सकती पिता की महानता,
पिता के कारण ही 'फरिश्ते' जैसी ,
बन जाती है शिशु अवस्था।
विश्व में किसी भी देवता का,
स्थान दूजा है,
माता-पिता की सेवा ही,
सबसे बड़ी पूजा है।
बचपन में पिता ही उंगली पकड़ कर,
ना सिर्फ चलना सीखाते हैं,
पिता की दी गई अच्छी सीख से ही तो,
कठिन डगर में आगे बढ़ना सीखते हैं।
जब भी जीवन की कठिनाई से,
मुश्किल लगे जीतना,
तब पिता की वो बातें याद करना,
जिनसे मिली थी तुम्हें प्रेरणा।
खुशनसीब होते हैं वो लोग,
माता-पिता जिनके साथ होते हैं,
क्योंकि माँ-पिता के आशीषों के,
हजारों हाथ होते हैं।

❒ रचना बिश्नोई
सुपुत्री श्री बलबीर सिंह भाम्भू
सिवानी मण्डी, भिवानी (हरियाणा)
मो. 9813029292

हमारी मांग नहीं है

हमें पढ़ी-लिखी बहु चाहिए,
सुन्दर और कमाऊ होनी चाहिए,
अमीर घर की होनी चाहिए,
लेकिन हमारी मांग नहीं है.....

हमने लड़के को पढ़ाया है,
नौकरी के लिए पैसा लगाया है।
पुत्री के विवाह में 10 लाख लगाया है,
लेकिन हमारी मांग नहीं है.....

लड़के के कज़न का विवाह हुआ है,
थाली में 11 लाख नगद दिया है,
हम उनसे किसी तरह भी कम नहीं हैं,
लेकिन हमारी मांग नहीं है.....

लड़के देखते गए तो उनका घर देखा,
आदमी न देखे उनका जन देखा,
आदर मान ना देखा घर का समान देखा,
लेकिन हमारी मांग नहीं है.....

बिचौले से पूछा कि वे क्या देंगे,
पता चला तुम्हारी इच्छा से कम देंगे,
तो झट से कह दिया कि हम सोचेंगे,
लेकिन हमारी मांग नहीं है.....

भिखारियों का भी अपना स्टैण्डर्ड होता है,
बराबर वालों से कम ले मान भंग होता है,
पैसो की खातिर लड़की को ना पसन्द करते हैं,
और फिर गर्व से कहते हैं,
हमारी मांग नहीं है.....

मिटा दो अब दहेज का नाम अपने समाज से, दहेज भीख है, उसे निकाल दो रिवाज से।

अंशुल बिश्नोई
पुत्र श्री वजीर जोधकरण, कालवास
मो. 09671477928

पवन रूप फिरे परमेश्वर

सतयुग में विष्णु के अवतार नृसिंह भगवान हुए हैं, मगर हम प्रह्लाद के अनुयायी है क्योंकि नृसिंह भगवान जैसा आचरण तो हम कर नहीं सकते हैं। मगर उनके परम भक्त प्रह्लाद की तरह परमात्मा का पावन स्मरण करते-करते, उनको सूक्ष्म रूप से तरंगों में अपने आसपास उपस्थित तो कर ही सकते हैं। भगवान का जो भी स्वरूप है, हमारे सामने हमारी लौकिक आवश्यकताओं के अनुरूप भगवान रूप बदलकर प्रकट हो ही जाते हैं। हमें सबसे ज्यादा जीवित रहने के लिए प्राणवायु की आवश्यकता होती है। प्राणवायु के रूप में ऑक्सीजन हर पल लेना हमारे लिए जरूरी है। इसलिए जांभोजी कहते हैं कि 'पवन रूप फिरे परमेश्वर'। पवन उर्जा है उसका मर्यादा के साथ सेवन करके हम जिंदा रहते हैं। इस प्राणवायु का उत्पादन वृक्षों के पत्तों द्वारा तथा आदित्य नारायण की रश्मियों द्वारा होता है। यह नित्य घटित होने वाली विष्णु की लीला है।

'बाहर भीतर सर्व निरंतर जहां चीन्हो तहां पायो' परमात्मा बाहर भी है, अन्दर भी है, सदा सदा के लिए है। पहले भी हमेशा के लिए थे, अब भी सर्वसुलभ है और सर्व सुलभ रहना उनका कल्याणकारी स्वरूप है। उनकी अनुभूति आनंद के रूप में होती है। आनंद की अनुभूति आत्मा की ही होती है, आत्मा शरीर में विद्यमान है। अगर शरीर मलीन न बाहर भीतर से गंदा है तो यह अनुभूति या आनंद का अहसास नहीं हो सकता। आनंद एक प्रकार की ऊर्जा है भगवान शक्ति है व्यक्तियों में विद्यमान है। सब जगह विद्यमान है। सर्वसुलभ है।

डॉ. तेजाराम
राजकीय महाविद्यालय, गुड़गांव

समाज के प्रेरणा स्त्रोत

श्री रामस्वरूप थालोड़ (Retd. Deputy Secretary) निवासी हुड्डा सैक्टर, फतेहाबाद ने अपने सुपुत्र अतुल की शादी में दहेज न लेकर सराहनीय काम किया है समाज को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

अपील

नीली वर्दी पहनने को मजबूर बिश्नोई विद्यार्थी

विक्रमी सम्वत् 1542 में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने बिश्नोई पंथ की स्थापना की। जिसमें 29 नियमों की नियमावली बनाई। इन्हीं नियमों में अंतिम व 29वां नियम है 'नील न लावे अंग देखत दूर ही त्यागे' जिसका अभिप्राय है कि नीले वस्त्रों व नील का त्याग। लेकिन आज बिश्नोई समाज के बच्चों को यह नियम तोड़ना पड़ रहा है क्योंकि सरकार ने सरकारी स्कूलों में नीले रंग की यूनिफार्म लागू कर रखी है जिससे कि बिश्नोई समाज के बच्चों को यह यूनिफार्म पहनकर स्कूलों में जाना पड़ रहा है जबकि भारतीय संविधान के 42वें संशोधन कानून ने, नवंबर 1976 में 'पंथ निरपेक्ष' शब्द जोड़कर इसे और अधिक स्पष्ट कर दिया गया है। भारत में सभी नागरिकों को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 से 28 तक धार्मिक स्वतंत्रताएं प्रदान की गई है।

अनुच्छेद 25 में कहा गया है कि सभी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म या मजहब को अपनाकर उसका प्रचार कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का पालन और प्रसार करने की आजादी है और इतना ही नहीं संविधान में सांस्कृतिक और शैक्षणिक अधिकार भी दिए गए हैं क्योंकि भारत में कई धर्मों या संप्रदायों को मानने वाले लोग रहते हैं। इसलिए संविधान के अनुच्छेद 29-30 में इन अधिकारों की व्याख्या की गई है। अनुच्छेद 29 में कहा गया है कि भारत के किसी भी हिस्से में रहने वाले नागरिकों को अपनी संस्कृति भाषा और लिपि की रक्षा करने का अधिकार है और यह भी कहा गया है कि किसी भी नागरिक को सरकारी या सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त होने वाली शिक्षण संस्थाओं में पंथ या धर्म, जाति, वंश, भाषा के आधार पर प्रवेश देने से रोका नहीं जाएगा और भारतीय संविधान के 86वें संशोधन 2002 द्वारा अनुच्छेद 21 'क' जोड़कर शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार घोषित किया गया है।

इसलिए इन अधिकारों व 29 नियमों का पालन करते हुए भी समाज के बच्चे नीली यूनिफार्म न पहनकर भी स्कूल में जा सकते हैं और अगर कोई अध्यापक वर्दी न पहनकर आने पर किसी बच्चे को कुछ कहता है तो टीचर को बताएं कि यह हमारे 29 नियमों के विरुद्ध है और हमें भी धार्मिक अधिकार व शिक्षा का अधिकार है तो हम ये वर्दी पहनकर नहीं आ सकते। इसके बाद कोई अध्यापक वर्दी के विषय में कुछ नहीं कहेंगे।

जब मैंने ग्यारहवीं में सरकारी स्कूल में एडमिशन लिया तो मुझे भी अध्यापक ने प्रार्थना में नीली वर्दी पहनकर आने को कहा क्योंकि मैंने जो वर्दी पहन रखी थी वो छठी से आठवीं कक्षा तक लागू है। फिर एक दिन अध्यापक ने अपनी कक्षा में मुझसे कहा कि तुम वर्दी पहनकर नहीं आए। फिर मैंने उन्हें बताया कि यह नीली वर्दी है और धर्म नियम के विरुद्ध है। मैं यह वर्दी पहनकर नहीं आऊंगा। तब आध्यापक ने मुझे कक्षा से बाहर निकाल दिया और कहा कि जब वर्दी पहनकर आए तभी कक्षा में आना। लेकिन मैंने नीली वर्दी नहीं पहनी। इसके बाद वो दिन है और आज का दिन। किसी भी अध्यापक ने मुझे वर्दी के विषय में कुछ नहीं कहा।

मेरा अनुरोध है कि बच्चों व उनके माता-पिता से कि बच्चों को नीली वर्दी पहनाकर स्कूल ना भेजें और न ही बच्चे नीली वर्दी पहनकर स्कूल जाएं। समाज से मेरा हाथ जोड़कर अनुरोध है कि नीली वर्दी के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाएं।

नीली वर्दी के खिलाफ, उठाएं ऐसा कदम।
समाज के बच्चों को, न तोड़ने पड़े नियम॥

❐ **पवन सुथार** सुपुत्र श्री दयाराम
गांव मंगाली मोहब्बत, हिसार

एक वृक्ष की आत्मकथा

खड़ा हुआ था सड़क किनारे देने छाया मानव को
फल-फूल से भरा हुआ था जनहित अर्पित करने को
पक्षी करते थे घोंसला बनाकर कलरव करते थे मेरी शाखाओं पर
बच्चे सखियां झूले डाले मेरे तन की डालों पर
नन्हे-नन्हे पक्षी रहते नीड़ बनाकर मेरी ही हरियाली में
तोते मोर चिरैया करते चकचौर खुशहाली में
पर मानव ने डाला झूला और पत्ते भी सारे तोड़ दिए
मेरे दु:ख की चिन्ता ना कर फल-फूल सारे तोड़ लिये
मैंने अपना सब कुछ त्यागा तुमने यह सम्मान दिया
लेकर एक कुल्हाड़ी तिखी मेरे तन को काट दिया
फिर भी मेरी आह ना निकली और न कुछ उत्पात किया
मन ही मन सबको सहकर जन को फिर खुशहाल किया
फिर से निकले पत्ते डाली फिर से आई बहार नहीं
पर फिर हाय होकर निरखी कितना निर्मम फिर से लूटा मानव ने
अंत में जला ही डाला मेरे तन को मानव ने
कभी न सोचा कभी ना समझा मैं केवल एक वृक्ष नहीं
सह लेता कष्ट अनेकों हैं मैं पर कर सकता हूँ व्यक्त नहीं
प्रकृति ने देकर जन्म मुझे मुझ पर क्या उपकार किया
हे मानव बुद्धिमान हो तुम इस पर क्यों न विचार किया
मिट्टी को पकड़े रखता हूँ जिससे न धरती कह सकती
वर्षा बहिया बाढ़ों से वह मिट्टी न कभी बह सकती
मेघों को आकर्षित करता जो निश्चित वर्षा करते हैं
सूखे पत्ते बीजाहारो से खुशहाली पैदा करते हैं।
पत्ते बनते खाद जो फसलों में हरियाली करते हैं
तेज धूप में हलधर थककर मेरी छाया में सो जाते हैं
प्राणहीन ही होकर हर पल मानव सेवा करता हूँ
कुर्सी मेज पलंग दरवाजे और अलमारी बनता हूँ।
मानव के जन्म से मृत्यु तक मैं साथ रहा
पर मुझ पर जो बीत रही है उसको मैंने जाकर किसे कहा
शुद्ध ऑक्सीजन देकर तुझे गैस मैं जहरीली पीता हूं
स्वयं को प्रदूषण में रखकर गैर आक्सीजन देता हूं
इसलिए धरा पर भाई अनगिनत पेड़ लगाओ
एक वृक्ष लिये तुम्हारे 363 बुजुर्ग शहीद हुए
कुछ तो मन में बिश्नोइयो शरमाओ।

❐ **भूरा राम**
पुत्र जिराज भाम्भू, गांव मखुआना
पो. राजगढ़, तह. डाबवाली, जिला सिरसा
फोन : 01668-273577

भजन

तेरा जन्म मरण मिट जाय, हरि का नाम सिमरले रे।
हरि का नाम सिमरले रे, तू प्रभु की भक्ति करले रे॥

भक्ति करी श्री विष्णुदेव की लौहट जी तपधारी,
पुत्र रूप में मिले जाम्भोजी खुशियाँ मिल गई सारी,
अब तू जाम्भोजी न सिमरले रे, हरि का नाम सिमरले रे।
तेरा...(1)

भक्ति करी श्री रामचन्द्र जी की बाला जी ब्रह्मचारी,
मारे दानव, सुधी लाये सिया की, लंका जलाई सारी,
अब ना कोई रावण जन्मे रे, हरि का नाम सिमरले रे।
तेरा...(2)

भक्ति करी प्रह्लाद भगवान, प्रगटे कृष्ण मुरारी,
नरसिंह रूप धर हिरण्कश्यप मारे, छा गई खुशियाँ सारी,
अब ना कोई धर्म डगावे रे, हरि का नाम सिमरले रे।
तेरा...(3)

भक्ति करी उदो भगत ने, समराथल बैठी सभा भारी,
खल का नारेल बना दिया, जम्भेश्वर चमत्कारी,
नारेल से तू हवन कर ले रे, हरि का नाम सिमरले रे।
तेरा...(4)

जिला जोधपुर गाँव खेलड़ली, बलिदान दिया बड़ा भारी,
गिरधर दास की चली तलवारा, शहीद हुवे नर-नारी,
अमृता पेड़ ना काटण दे, हरि का नाम सिमरले रे।
तेरा...(5)

कृपा भई गुरु जम्भेश्वर की चन्द्र बोल जय थारी,
ज्ञान रूपी प्रकाश से दुनिया जगमग हो गई सारी,
चन्द्र तू हरि सिमरले रे गुरु जी गा भजन करले रे।
तेरा...(6)

चन्द्र प्रकाश बिश्नोई, मुख्याध्यापक
रा.सी.सै.स्कूल, मीठी सुमनान
त. एलनाबाद, सिरसा, हरियाणा
मो. 098123-34110

बिश्नोई समाज के प्रति हमारे मन की बात

आज के युग में अच्छे बुरे सभी प्रकार के लोग रहते हैं। हमारा समाज सबसे सर्वश्रेष्ठ है। हमारे बिश्नोई समाज को लोग लोहा मानते हैं, हमारे समाज को जीवों का रक्षक माना जाता है जो जीवों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि दे दे वह बिश्नोई समाज है, क्योंकि जो दूसरों की रक्षा करते हैं। उनकी भगवान रक्षा करते हैं। इसलिए तो हमारे समाज पर ईश्वर की कृपा बनी रहती है, मुझे बहुत खुशी होती है कि बिश्नोई समाज में मेरा जन्म हुआ। हम भगवान के शुक्रगुजार हैं। यही गुरु महाराज से निवेदन करते हैं कि जब आपने इस समाज में जन्म दिया है तो आप हमें हमारे समाज का नाम रोशन करने की शक्ति प्रदान करें।

लेकिन अक्सर हमें उस बात पर बहुत दु:ख होता है जब कोई व्यक्ति हमारे समाज पर उंगली उठाता है तब बहुत दु:ख होता है तथा अपने आप पर इतनी घृणा आती है कि हमारे समाज से ऐसे लोग क्यों हैं जो समाज को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। लेकिन सत्य को छुपाया भी नहीं जा सकता है। एक बार हम 365 हैड से सुरतगढ़ की तरफ आ रहे थे, उस समय हम ऑफिस के कार्य से गये हुए थे। हमारा कार्य पूरा होने में कुछ ज्यादा समय लग गया था और शाम के करीबन 8 बजे का समय था और हम बाइक पर सवार थे। थोड़ी दूर चलते हैं कि अचानक पुलिस ने हमें रूकने का इशारा किया और हमने बाइक रोक दी और एक साइड में बाइक खड़ी कर दी। उससे पहले कि हमारे आगे एक गाड़ी खड़ी हुई थी वो हमारे समाज की थी और उस गाड़ी के चालक के पास अमल था। हमें रोकते ही पुलिस वाले हमारे पास तुरन्त पहुंचे, हमारी बाइक के आगे गुरु महाराज की फोटो लगी हुई थी और उसके नीचे BSNL लिखा हुआ था और ये देखते ही बाइक को चारों ओर से घेर लिया और हमें बोला कि बिश्नोई साहब बाइक के बैग में क्या है? हमने बोला कि कुछ नहीं है भूख लगी हुई थी तो खाने के लिए मटर ली थी वो ही है। तो पुलिस वालों का हमें जवाब मिला कि मटर से क्या करते हैं? बिश्नोई, बिश्नोई लोगों का तो काम अमल, पोस्त का है, ये देखो आपके सामने सबूत भी है जिसके पास अमल मिला है, ये सुनकर दिल को बहुत ही ठेस पहुंची, लेकिन हमारा आइडी कार्ड चैक कर और हमें कर्मचारी बताकर छोड़ दिया, लेकिन दिल को आघात पहुंचा और हमने विचार किया कि हमसे जितना हो सके समाज को नीचा झुकने नहीं देंगे। हमारा कहने का तात्पर्य यह है कि

भगवान का दिया कभी अल्प नहीं होता,
जो टूट जाये वो संकल्प नहीं होता॥
हार को जीत से दूर ही रखना,
क्योंकि जीत का कोई विकल्प नहीं होता...॥

समाज एक परिवार है तथा इस परिवार पर कोई व्यक्ति लांछन लगाए ये हमारे परिवार या समाज को शोभा नहीं देता इसलिए आज के समय में हमारे समाज को एकत्रित होकर इन कुरीतियों को समाप्त करने का बीड़ा उठाना चाहिए। हमारा समाज सर्वश्रेष्ठ और इस समाज की लाज रखना हमारा कर्त्तव्य है, बूढ़े बुजुर्गों ने सत्य ही कहा है कि पहले के समय में बिश्नोई के शरीर से खुशबू आती थी। उस घर में दु:ख दर्द किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता था तथा अन्न धन के सदा भण्डार भरे रहते थे। इसलिए तो कोई भी व्यक्ति अपने घर पर बिश्नोई को बुलवाने के लिए उत्साहित रहते थे कि बिश्नोई हमारे घर पर पहुंच कर मेरे घर के आंगन को पवित्र कर दे क्योंकि जिस घर में बिश्नोई प्रवेश करते थे वो घर चरण स्पर्श से पवित्र हो जाता था, गुरु जम्भेश्वर महाराज की इतनी बिश्नोई समाज पर कृपा थी। वो कृपा गुरु महाराज तब न्योछावर करते थे जो 29 नियमों का पालन करते थे और वो कृपा आज भी देखी जाती है जो 29 नियमों का पालन करते हैं। इसलिए मेरा अपने समाज से निवेदन है कि बिश्नोई समाज में जन्म लेने से बिश्नोई नहीं होता वो 29 नियमों का पालन करने से बिश्नोई होता है, तथा गुरु जम्भेश्वर महाराज की गरीमा बनाए रखें।

❒ **सतवीर बिश्नोई,** BSNL (सुरतगढ़)
श्रीगंगानगर, राजस्थान
मो. 94607-10129, 94603-33331

महिला सशक्तिकरण : क्यों और कैसे

महिलाएं हमारे देश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी कहलाती है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं घर से लेकर खेत खलिहान तक सभी कार्य करती है। ग्रामीण महिलाएं औसतन 24 घंटों में 18 घंटे कार्य करती हैं। घर के सभी कार्य जैसे कि बच्चों का लालन पालन, परिवार को भोजन सम्बन्धी सभी जरूरतों के साथ-साथ पशुओं का चारा लाना, दूध दुहना व खेतों में पौध लगाना, नरमा चुगना, फसल कटाई, अनाज का भण्डारण व खेतों में ऑफ सीजन में ध्यान रखना आदि कार्य महिलाएं ही करती हैं। विभिन्न कार्यों में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद भी उन्हें निर्णायक प्रक्रिया से बहुत दूर रखा जाता है। इसका मुख्य कारण महिलाओं का अशिक्षित होना।

जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो इसका अर्थ है उसमें इतना आत्मविश्वास व शक्ति हो कि वह अपने घर परिवार सम्बन्धी सभी फैसले लेने में सक्षम हो। यह तभी संभव है जब महिला शिक्षित होगी। समाज में होने वाले सभी आर्थिक, सामाजिक व तकनीकी परिवर्तनों की जानकारी रखेगी। इसके अतिरिक्त महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना भी आवश्यक है, इसके लिए महिलाओं को विस्तृत (विस्तार) शिक्षा की जरूरत है जिसमें विस्तार कार्यकर्ता अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं जैसे कि स्वयंसिद्धा, बालिका समृद्धि, स्त्री शक्ति आदि चलाई जा रही हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए सामाजिक ढांचे में बदलाव लाना जरूरी है। यह तभी संभव है जब महिला को पुरुष के बराबर का दर्जा दिया जाएगा व महिलाएं भी अपने आपको बेचारी ना समझें व अधिकारों का सदुपयोग करें। इसके लिए पुरुष को आगे आना होगा और उसे घर व बाहर को सभी प्रकार की जिम्मेवारियों से अवगत कराया जाएगा। उसके निर्णय को प्राथमिकता दी जाएगी। पुरुष स्त्री के आगे बढ़ने में सक्रिय योगदान दें व उसे विकास संबन्धी सभी कार्यक्रमों में हिस्सा लेने की अनुमति दें। इससे पहले वाले लेख में भी लिखा थी कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान में लड़कियों को गृह विज्ञान संबन्धी उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है। लड़कियां यहां बी.एससी. से लेकर पी.एचडी. तक की पढ़ाई कर सकती हैं। बी.एससी. के लिए दसवीं व बारहवीं के बाद दाखिला लेने का प्रावधान है। दसवीं से 6 साल व बारहवीं से 4 वर्ष लगते हैं। लड़कियों के लिए ट्यूशन फीस मुफ्त है। हॉस्टल में रहने का प्रबंध है। ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियां व महिलाएं उपरोक्त का अधिक से अधिक लाभ उठाए ताकि वे पढ़-लिखकर सशक्त बन सके। हमारे समाज व देश का विकास तभी संभव है जब महिलाएं व पुरुष एक दूसरे का पूरक बनकर नई ऊँचाइयों तक ले जा सकें।

❒ **हेतराम जाणी**
गांव बड़वा, भिवानी
hetramjyani2991@gmail.com

सत्संग

सत्संग का नशा अद्‌भुत है। सत्संग का नशा या तो किसी पर चढ़ता नहीं है और अगर चढ़ जाए तो उतरता नहीं। जिस प्रकार लोहे पर रंग लगा देने पर उसमें जंग नहीं लगाता, ठीक उससी प्रकार जीवन पर भक्ति, संत्संग का रंग चढ़ जाए तो उस पर वासना रूपी जंग नहीं लगता। सत्संग से बैकुण्ठ मिलता है। पलभर में सत्संग आपके विचारों को बदल सकता है, बशर्ते आप: इसके लिए हृदय से तैयार हों।

संत कहते हैं कि सत्संग में बैठने से सब को लाभ होता है। यदि कोई आदमी सत्संग की भाषा ही नहीं समझे तो उसे कौन सा लाभ होगा। लेकिन जरा सोचिये यदि कोई अंधा आदमी फलों के बाग में चला जाए तो वो वहां की खूबसूरती तो नहीं देख पाएगा, लेकिन खुशबू तो जरूर ले सकता है, इसे तो वह महसूस कर सकता है।

सत्संग में यदि भाषा को नहीं समझ सकता है तो भी वह उतनी देर कम से कम पाप कर्मों से तो बचता ही है। जिसने हमें यह मनुष्य देह दी है, उस प्रभु को निरन्तर याद करना चाहिए। सुमरिन से ही सुमरण होता है।

बजरंग लाल डेलू
वी.पी.ओ. काकड़ा, त. नोखा (बीकानेर)
मो. 9887660821

स्वयं को पहचानो

हमें दृष्टिगोचर व अदृष्टिगोचर होने वाला। यह अद्‌भुत सुन्दर व विशालकाय माया-भय साम्राज्य। एक ईश्वरीय शक्ति द्वारा निर्मित है। जिस साम्राज्य में मानव एक अपार बुद्धि जीवि प्राणी है और जिसका ज्ञान अथाह व अनन्त है। जो ईश्वरीय अनुकम्पा से ही मानव को उसकी बौद्धिक क्षमतानुसार प्राप्त होता है पर यही स्वार्थी मानव अपने अहंकार या भूल वश माया चक्र के वशीभूत होकर। सभी ईश्वरीय कृपाओं को दरकिनार करते हुए व उसका स्मरण त्याग कर। उसकी नियमबद्ध पद्धति के साथ मन माना घिनौना खिलवाड करने लगता है या अपने अहंकार के भय में ले जाता है। तब ऐसी विकट परिस्थितियों में, माया भय सत्ता के कर्णधार भगवान विष्णु की एक व अनेक परम पवित्र ज्योति, अपनी पूर्ण आलौकिक शक्तियों व दिव्य ज्ञान के साथ, ऐसे अहंकारियों का दमन करने और अपनी नियमबद्ध पद्धति की सुचारू रूप से समझाने के साथ-साथ, प्रिय भक्तों का कल्याण करने हेतु किसी न किसी में माया-भय मृत्यु लोक (वसुंधरा) पर अवतरित होती है।

संवत 1508 विक्रमी (सन् 1451) भाद्रपद अष्टमी की पवित्र अर्धरात्री को राजस्थान के मरूभूमि ग्राम पीपासर के ग्रामपति ठा. श्री लोहट जी पंवार घराने में एक ऐसी दिव्य परम पवित्र ज्योति श्री कृष्णावतार की भांति परम तेजस्वी बालक के रूप में अवतरित हुई और जीव रूप में आई यह पवित्र ज्योति समयानुसार उस पवित्र नाम से विख्यात हुई। जिस पवित्र 'जम्भो' नाम का उच्चारण वैदिक मंत्रों में होता आ रहा है।

श्री कृष्णावतार की अधूरी ग्वाल-बाल लीलाओं को अपने जंभावतार में साकार करते हुए भगवान जम्भेश्वर (विष्णु) ने अनेकों राजाओं-रानियों, ज्ञानी-महाज्ञानी, साधु-संतों, योगी-तांत्रिकों व जन साधारण स्त्री-पुरुषों को अपने दिव्य चमत्कारों से सक्षात् कराते हुए उनका मद् चुर-चुर किया व परम पवित्र सत्य मार्ग दिखाया और अपनी मुख वाणी इतना ज्ञान रत्न बांटा कि उसकी कल्पना कर पाना हमारे जहन से कोसो दूर है, अर्थात असम्भव है क्योंकि गुरुवर भगवान जाम्भो जी की मुख वाणी से बिखरे वो अनमोल रत्न, उस समय के बुद्धि जीवियों द्वारा पूर्ण रूप से समेटे न जा सके, साथ ही बाहरी धर्मावलम्बी आक्रमणकारियों के आक्रमणों से देश के साथ-साथ बिश्नोई धर्म के समाज व धर्म शास्त्र को भी अत्याधिक क्षति का ग्रहण लगा, पर समयानुसार आज भी बिश्नोई धर्म के पास जो पवित्र धर्म ग्रंथ 'जंभ सागर' है। वो अपनी गहराई में असंख्य रत्नों के रत्न समाए हुए हैं कि डंके चोट पर व वैज्ञानिक दृष्टि से हर स्तर पर इतने खरे व कल्याणकारी हैं। जिनका विधिवत् अध्ययन व पालन करने से नि:सन्देह हर वर्ग, धर्म-समाज, पंथ व राष्ट्र कल्याण संभव है, असम्भव का तो किंचित मात्र भी स्थान नहीं। जिसका प्रथम सक्षात् प्रमाण रहे बिश्नोई धर्म नियम हैं और बाकी तो 'जाम्भ सागर' की गहराई में समाए हुए रत्न है। अमृत्व प्राप्त कराने वाले ऐसे पवित्र धर्म पंथ से व अमृत्व प्राप्त कराने वाले ऐसे पवित्र धर्म पंथ से आज का युवा बिश्नोई दिशा हीन होता नजर आ रहा है। कुछ बिश्नोई जन तो अन्य पाखण्डों में माथा टेक रहे हैं, पर सत्य है। छले जाने के बाद स्वयं अपना माथा पीट-पीट कर शर्मसार हो रहे हैं। ऐसा कब तक चलेगा अब तो स्वयं को पहचानो और सच्चे गुरु की शरण में आ जाओ। अन्यथा स्वयं के ऐसे जानों जैसे उल्टे घड़े पर कितनी ही घनघोर वर्षा हो जाए। वह अन्दर से खाली हो रहता है। सम्भवत: तृप्ति तो उसे मिलती है, पर न तो उस स्वयं का कल्याण होता है और न ही वो अपने पास आने वाले उस प्यासे का कल्याण कर सकता है।

❒ **हरि ओम बिश्नोई**
गुरुद्वारा रोड़, नई बस्ती, बिजनौर
मो. 9012339705, 9917610327

उपेक्षा का शिकार नगीना शहीदी स्थल

देश के विभिन्न भागों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने श्री गुरु जम्भेश्वर धाम लोधीपुर (मुरादाबाद) मेला दिनांक 20 मार्च, 2015 में भाग लेकर पूजा अर्चना की तथा मन्दिर में दीप प्रज्जलित करके मेले की शोभा बढ़ाई। हवन के दौरान 120 सबदों के श्रवण का आनन्द उठाया। इसके बाद सैकड़ों मेलार्थियों ने कांठ में होनी वाली दो दिवसीय सफल राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिनांक 21 व 22 मार्च को भाग लिया, जिसका आयोजन जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने किया था। कांठ व लोधीपुर के लोगों का आतिथ्य सत्कार काबिले तारिफ है।

मेला व संगोष्ठी में भाग लेने के उपरान्त श्रद्धालुओं के एक समूह/ग्रुप, जिसमें समाज के कई गणमान्य लोग तथा महासभा सदस्य भी शामिल थे, धार्मिक यात्रा के उद्देश्य से नगीना जिला बिजनौर की यात्रा की। श्रद्धालुओं का जत्था सबसे पहले नगीना स्थित शहीदी स्थल पहुंचा जहां पर जाम्भो जी महाराज ने सर्वप्रथम एक इमली के पेड़ के नीचे बैठकर कई यात्रियों को एक ही कमंडल से पानी पिलाया था परन्तु पानी समाप्त नहीं हुआ था जिससे नगीना वासियों को विश्वास हो गया कि यह साधु स्वयं ही भगवान है। इस सात बीघा स्थल को शहीदी स्थल के निर्माण की आवश्यकता है क्योंकि इसी स्थान पर 52 बिश्नोई लोगों ने देश के खातिर अपने जीवन का बलिदान दिया था। नगीना पहुंचने के उपरान्त गुरु महाराज ने पुराने मन्दिर में चार महीने रहकर लोगों को शिक्षा प्रदान की थी। श्रद्धालुओं ने पुराने व नये मन्दिर में भी माथा टेका। पुराने मन्दिर परिसर में गुरुजी के पद चि आज भी मौजूद है।

श्रद्धालुओं द्वारा नगीना के बिल्कुल साथ लगते 30 बीघा भूमि में खड़े महासभा के आम के बाग का भी अवलोकन किया, जिसका रख-रखाव ऋषिकेश मन्दिर कमेटी के माध्यम से किया जा रहा है। इस लेख के माध्यम से अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा मुकाम व अन्य मजबूत जिला सभाओं से अनुरोध है कि सही रख-रखाव के लिए इस बाग के चारों तरफ चार दीवारी का निर्माण तुरन्त आवश्यक है तथा शहीदी स्थल का भी उचित प्रबन्धन जरूरी है। भले ही यह समय महासभा चुनाव के मद्देनजर उचित मालूम ना पड़ता हो लेकिन समाज हित में यह अत्यन्त व तुरन्त आवश्यक है। इस 30 बीघा भूमि में स्थानीय लोगों व समाज की भलाई हेतू अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, या अन्य संस्थान बनाये जाने की भी आवश्यकता है। स्थानीय लोगों के साथ विचार-विर्मश के दौरान डेलीगेशन में शामिल सभी श्रद्धालु इस बात पर एकमत थे कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड व देश के अन्य राज्यों में रहने वाले बिश्नोइयों के साथ हरियाणा, पंजाब व राज्यस्थान के लोगों की नजदीकियां व सम्पर्क रहना समाज की एकता व भलाई के लिए अति आवश्यक है, ताकि उन्नति हो सके, और यह तभी संभव है कि हम सभी को समान रूप से देखते हुए समान व्यवहार व कार्यवाही करें।

यह भी महसूस किया गया कि स्थानीय सम्पदा से अगर कोई आय महासभा या उच्च प्रबन्धन कमेटी को होती है तो उसका एक हिस्सा स्थानीय लोगों की भलाई के लिए भी समाज हित में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि एकता व सदभावना बनी रह सके।

❒ **आत्मा राम पुनिया**
कुरुक्षेत्र

कांठ में जाम्भाणी राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के बिश्नोई बाहुल्य क्षेत्र कांठ में जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर और ट्रस्ट श्री जम्भेश्वर महाराज, कांठ के संयुक्त तत्वावधान में 21-22 मार्च, 2015 को 'भगवद् रूप मीमांसा और गुरु जाम्भोजी' विषय पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन 21 मार्च को प्रातः 10 बजे हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री जसवंत सिंह बिश्नोई, अध्यक्ष केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड, भारत सरकार थे। इस सत्र की अध्यक्षता महामहोपाध्याय डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री, पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की। डॉ. जयपाल 'व्यस्त' सदस्य विधान परिषद उत्तर प्रदेश इस सत्र के विशिष्ट अतिथि थे तथा पूर्व प्राचार्य डॉ. गणेश दत्त शास्त्री ने बीज वक्तव्य दिया।

सत्र के प्रारम्भ में स्वामी राजेन्द्रानन्द जी, अध्यक्ष, ट्रस्ट श्री जम्भेश्वर महाराज, कांठ ने संगोष्ठी में पधारे सभी अतिथियों, विद्वानों व श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह संगोष्ठी एक महत्वपूर्ण विषय को लेकर हो रही है। स्वामी जी ने कहा कि भगवान जम्भेश्वर विष्णु के अवतार थे तथा लोक कल्याण हेतु धराधाम पर अवतरित हुए थे। बीज वक्तव्य में डॉ. गणेश दत्त जी ने कहा कि वेदों से लेकर अब तक सभी धर्म ग्रंथों में भगवद् रूप की चर्चा मिलती है। गुरु जाम्भोजी की वाणी में भी भगवद् रूप की विस्तृत चर्चा हुई। आपने कहा कि विष्णु की चर्चा सर्वप्रथम वेदों में मिलती है और सबदवाणी में विष्णु नाम का ही विस्तार है। गुरु जाम्भोजी के अलौकिक कार्य एवं व्यक्तित्व से यह सिद्ध होता है कि वे कोई सामान्य संत नहीं थे, अपितु भगवान् विष्णु के पूर्ण कलावतार थे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में महामहोपाध्याय डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री ने भगवद् स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने कहा कि सृष्टि उत्पत्ति, पालन-पोषण ही भगवान का कार्य है और यही कार्य अपने विभिन्न अवतारों में भगवान विष्णु ने किया। कलयुग में यह कार्य भगवान जम्भेश्वर ने अवतार धारण कर किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. जयपाल सिंह व्यस्त ने कहा कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि

पुस्तकों का विमोचन करते मंचासीन अतिथिगण।

हम विद्वानों के सान्निध्य में बैठकर भगवान जम्भेश्वर की महिमा का श्रवण कर रहे हैं। आपने कहा कि गुरु जम्भेश्वर ने उत्तम तरीके से जीवन जीने की राह दिखाई थी। यदि आज विश्व उनके दिखाए मार्ग पर चले तो धरती ही स्वर्ग बन सकती है। मुख्य अतिथि श्री जसवंत सिंह बिश्नोई ने अपने उद्बोधन में भगवान श्री जम्भेश्वर की शिक्षाओं और बिश्नोई समाज के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठियों से जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं का विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार होगा और इससे पूरा विश्व लाभान्वित होगा। अपने धन्यवाद ज्ञापन में जाम्भाणी

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अकादमी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी भक्ति काव्य धारा और जाम्भाणी साहित्य', 'जाम्भाणी साहित्य साधक- संत साहबराम' और 'अष्टधाम' पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्द आचार्य ने उद्घाटन सत्र के सभी अतिथियों व विद्वानों का धन्यवाद किया। इस सत्र का संयोजन डा. मनमोहन लटियाल व डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई ने किया।

अपराह्न 1 बजे प्रथम बौद्धिक सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक सभ्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ने की तथा पूर्व एडीसी श्री अशोक बिश्नोई इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। इस सत्र में डॉ. ब्रजेन्द्र सिंघल, जयपुर; डॉ. रमेश चन्द्र यादव, मुरादाबाद; डॉ. वीणा बिश्नोई, हरिद्वार; कुमारी शर्मिला,

स्वागत सत्र के दौरान संबोधित करते स्वामी राजेन्द्रानन्द जी।

समापन सत्र के दौरान मंचासीन अतिथिगण।

चण्डीगढ़; रामनारायण गोदारा, फलौदी व पंजाब विश्वविद्यालय के शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र का संयोजन पंजाब विश्वविद्यालय के शोधार्थी विनोद भादु व कुमारी सुनीता ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन इंस्पेक्टर दिलावर सिंह ने दिया। जलपान के पश्चात 3.30 बजे दूसरा बौद्धिक सत्र आयोजित हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामानन्द शर्मा, मुरादाबाद ने की तथा इस सत्र के मुख्य अतिथि श्री हनुमान सिंह बिश्नोई, अध्यक्ष गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली थे। इस सत्र में डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, बीकानेर; डॉ. हुसैन खान शेख, सांचौर; डॉ. छाया बिश्नोई, मुरादाबाद; डॉ. मनमोहन लटियाल, दिल्ली; मांगीलाल सिहाग, मोतीराम कालीराणा, मास्टर बुद्धराम जाणी, फलौदी आदि ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र का संयोजन विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर की शोध छात्राओं कुमारी साक्षी व कुमारी शालिनी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन पूर्व पुलिस उपाधीक्षक श्री महेन्द्र सिंह बिश्नोई ने दिया। रात्रि 8 से 10 बजे तक काव्य गोष्ठी व सामाजिक परिचर्चा आयोजित की गई। इस सत्र में कर्नल गंगाराम धारणियां ने अध्यक्षता की तथा लगभग 25 प्रतिभागियों ने अपनी कविताएं व विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संयोजन का. रामेश्वर डेलू व मास्टर राजवीर सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री योगेन्द्रपाल सिंह बिश्नोई ने किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में उल्लेखनीय साहित्य सेवा करने के लिए स्वर्गीय बलबीर सिंह, मुरादाबाद; स्व. फकीरचन्द बिश्नोई, स्यौहारा और डॉ. ब्रह्मानन्द को अकादमी की ओर से अभिनन्दन पत्र, शाल व 11-11 हजार रुपये की राशि देकर सम्मानित किया गया। समापन सत्र में कांठ रियासत की उल्लेखनीय समाज सेवाओं के लिए कुंवर सुरेन्द्र सिंह व कुंवर भूपेन्द्र सिंह को स्मृति चिन्ह व शॉल देकर सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 22 मार्च को प्रातः 9 बजे तीसरा बौद्धिक सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. ब्रह्मानन्द, पूर्व प्रोफेसर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने की तथा डॉ. रोहताश कुमार, डी.लिट्. इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। इस सत्र में डॉ. बनवारी लाल सहू, हनुमानगढ़; श्री मनोहर लाल गोदारा सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार; श्री आर.के. बिश्नोई, दिल्ली; श्री रामकुमार डेलू, अबोहर; श्री उदाराम खिलेरी, सांचौर; श्री राजकुमार सेवक; रसूलपुर गुज्जर; श्री छोगाराम सहारण, जोधपुर ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र का संयोजन श्री मोहनलाल बिश्नोई व अनिल धारणियां, फतेहाबाद ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री प्रदीप कुमार बिश्नोई ने दिया। पूर्वाह्न 11.15 बजे संगोष्ठी का चौथा बौद्धिक सत्र प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. ब्रजेन्द्र सिंघल ने की तथा डॉ. सरस्वती बिश्नोई बीकानेर इस सत्र की मुख्य अतिथि थी। इस सत्र में डॉ. आयदान सिंह भाटी; श्री छगन लाल बिश्नोई, कोटा; श्री ओपी बिश्नोई सुधाकर, दिल्ली; श्री पृथ्वीसिंह बैनीवाल, पंचकूला; श्री पृथ्वी सिंह बिश्नोई, आदमपुर ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र का संयोजन श्री ऋषिराज सिंह बिश्नोई ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मास्टर सीपी सिंह ने दिया।

अपराह्न 1.30 बजे इस दो दिवसीय संगोष्ठी का समापन सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि सांचौर के विधायक श्री सुखराम बिश्नोई थे तथा अध्यक्षता स्वामी कृष्णानन्द आचार्य ने की। फलौदी के विधायक मास्टर

पब्बाराम बिश्नोई विशिष्ट अतिथि थे तथा डॉ. बाबूराम अध्यक्ष हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने सारस्वत वक्तव्य दिया। डॉ. बाबूराम ने कहा कि इस संगोष्ठी में लगभग 40 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए तथा अनेक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों ने भाग लिया। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली और मध्यप्रदेश के श्रोताओं व विद्वानों ने भाग लेकर इस संगोष्ठी को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है तथा भविष्य में यह संगोष्ठी एक नये पथ का दिग्दर्शन करवाएगी। श्रोताओं के प्रतिनिधि के रूप में बोलते हुए श्री बीरबल जी धारणियां, बीकानेर ने कहा कि विद्वानों के शोधपत्रों से श्रोता लाभान्वित हुए हैं और आयोजकों की ओर से की गई व्यवस्था अत्यन्त ही सराहनीय है। विशिष्ट अतिथि श्री पब्बाराम बिश्नोई ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और इस संगोष्ठी के माध्यम से अनेक नए पहलू सामने आए हैं। मुख्य अतिथि श्री सुखराम बिश्नोई ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान की वाणी ज्ञान का अथाह भण्डार है। हमें केवल हवन के समय इसका पाठ ही नहीं करना चाहिए अपितु इसके अर्थ को भी समझना चाहिए। बिना अर्थ को समझे हमें पूरा लाभ नहीं मिल सकता। अपने समापन भाषण में डॉ. सोनाराम बिश्नोई, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी ने संगोष्ठी के आयोजन को एक बहुत बड़ी उपलब्धि बताया। आपने कहा कि यह संगोष्ठी अनेक मायनों में अपनी विशिष्टता रखती है तथा इसके माध्यम से भगवान श्री जम्भेश्वर के अलौकिक कार्यों व विश्व के प्रति उनकी देन पर प्रकाश डाला गया है। यह संगोष्ठी आने वाली संगोष्ठियों का पथ प्रदर्शन करेगी। कुंवर भूपेन्द्र सिंह ने कांठ रियासत का परिचय दिया। कुंवर सुरेन्द्र सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी नवल माधुरी जी ने अपना आशीर्वचन भी दिया। समापन सत्र का संयोजन डा. छाया बिश्नोई व डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई ने किया।

विष्णुधाम सोनड़ी में विशाल जम्भेश्वर मेला सम्पन्न

बाड़मेर जिले के धौरीमन्ना पंचायत समिति मुख्यालय से 30 किलोमीटर पश्चिम में स्थित विष्णुधाम सोनड़ी में 376वां विशाल जम्भेश्वर मेला यज्ञ एवं पाहल के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने जाम्भोजी की जय जयकार से पूरा वातावरण भक्तिमय बन गया। हर वर्ष की भांति इसी वर्ष चैत्र की अमावस्या को मेला भरा जिसमें मेले की पूर्व संध्या को एक शाम भगवान जाम्भोजी के नाम विशाल जागरण में महन्त स्वामी हरीदास, स्वामी रामानन्द के पवन सान्निध्य में बिश्नोई समाज के जाम्भाणी साखी के प्रकांड संगीताचार्य शिवदासजी जाम्भा ने आरती, साखी, भजन, कथाओं से पूरा वातावरण भक्तिमय बना दिया। भक्ति संध्या में हजारों श्रोताओं ने अपने आपको धन्य किया। आकर्षक रोशनी से सज्जा मन्दिर जाम्भोजी की जय जयकार से गूंज उठा।

प्रात: 08.30 बजे महन्त स्वामी हरिदासजी महाराज, स्वामी रामानन्दजी ने सबदवाणी के 120 सबदों से विशाल यज्ञ एवं पाहल हुआ जिसमें हजारों पर्यावरण प्रेमी श्रद्धालुओं ने घी व नारियल की स्वाह के साथ आहुती देकर खुशहाली की कामनाएं की। भगवान की जय जयकार करते हुए मन्दिर में 176 वर्ष से प्रज्ज्वलित अखण्ड ज्योति के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य किया। देखते ही देखते यज्ञ की लपटे 10-10 मीटर उपर उठने लगी। पर्यावरण प्रेमी श्रद्धालुओं ने पक्षियों के चुगे का ढेर लगा दिया।

दिन में 1:00 बजे बिश्नोई समाज सेवा समिति सोनड़ी एवं श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल का खुला अधिवेशन हुआ जिसमें श्री अंनतरामजी खिलेरी, भारतीय किसान संघ जिला महामंत्री हरिरामजी मांजू, सरपंच प्रतिनिधि गंगाराम सियाक ने अपने विचार रखे। मंच संचालन हनुमान जाणी ने किया। बिश्नोई समाज सेवा समिति सोनड़ी के आय-व्यय का ब्यौरा कोशाध्यक्ष श्री सुखराम खिलेरी ने रखा।

❐ **मोहनलाल खिलेरी,** अध्यक्ष
श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल
सोनड़ी

जाम्भोलाव मेला सम्पन्न

आस्था से लबरेज तीर्थशिरोमणि जाम्भोलाव मेला जोधपुर फलौदी के जाम्भा में भरा जाने वाला बिश्नोइयों का अमृत सरोवर जाम्भोलाव मेला आस्था और श्रद्धा से लबरेज रहा। 19 मार्च, 2015 की रात्रि को संतों के सान्निध्य में जागरण का आयोजन हुआ जिसमें कई सन्त महात्माओं सहित अनेक कलाकारों ने भक्तिमय मधुर प्रस्तुतियां देकर श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। अमावस्या की रात्रि होने से लोगों ने सवेरे तक जागरण का श्रवण कर सीधा सरोवर में न्हाण कर पाप से मुक्ति चाही।

20 मार्च को प्रातः 120 सबदों के पाठ के बाद पाहल का कार्यक्रम हुआ। हजारों श्रद्धालुओं ने पवित्र तीर्थ सरोवर में डुबकी लगाकर अपने आपको पवित्र किया। निज मन्दिर के आगे बने विशाल हवन कुण्ड में पूरे दिन आहुतियां देने का कार्यक्रम चलता रहा। समाज के अनेकों भामाशाहों, धनाढयों और समाज समर्पित लोगों ने अपनी पुण्य कमाई का कुछ हिस्सा मन्दिर निर्माण हेतु दिया। धार्मिक सभा का आयोजन 11 बजे से 3 बजे तक चला। जिसमें समाज के लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने समाज में बढ़ रही नशा प्रवृति और घट रहे सामाजिक मान-मर्यादा को लेकर समाज को सचेत किया। वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता और समाज सेवी मालाराम राव ने अपने चिरपरिचित अन्दाज में समाज में फैल रही बुराइयों और टूट रहे समाज पर कड़े प्रहार करते युवाओं को सुधरने और सचेत रहने की हिदायत भी दी। राव ने बिश्नोई समाज में रामानन्द जी को समाज में संत मुख्य बताते हुए संत समाज द्वारा समाज में योगदान को लेकर भी अपनी बात रखी। इन्होंने मेला कमेटी से मन्दिर में तेजी लाने पर भी विचार रखें। श्री रामसिंह पंवार, महासचिव अ.भा. बिश्नोई महासभा ने मेला व्यवस्था बनाने में पूर्ण सहयोग किया तथा अ.भा. श्री गुरु जम्भेश्वर सहयोग दल की ओर से विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। सेवक दल अध्यक्ष श्री सीताराम जी मांजू ने बताया कि सेवक दल का प्रयास रहता है कि मेले में आए हुए श्रद्धालुओं को हर संभव सुविधा मिले। इस मेले में श्री बिश्नोई सभा, हिसार की ओर श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार; श्री राजाराम खिचड़, कोषाध्यक्ष, बिश्नोई सभा, हिसार; श्री मनोहर लाल गोदारा, सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार; चौ. रामस्वरूप जौहर, श्री अचिन्तराम गोदारा, प्रधान, बिश्नोई सभा, पंचकूला; चौ. सुधीर गोदारा, नीमड़ी; श्री जगदीश कड़वासरा, प्रधान, अ. भा. गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति; श्री कृष्णदेव पंवार; श्री अमरसिंह मांजू, श्री आत्माराम जाजूदा; श्री कृष्ण राहड़; श्री रामकुमार कड़वासरा; श्री रामस्वरूप सिहाग; श्री सुभाष जाणी; श्री राजाराम भादू; श्री भजनलाल फुरसाणी; श्री रामेश्वर जोधकरण; श्री रामकुमार गोदारा; श्री बंसीलाल राहड़; श्री पालाराम करीर; श्री इन्द्रसिंह खदाव तथा श्री जोगिन्द्र सिंह पंवार, नक्शा नवीस आदि उपस्थित रहे। प्रधान श्री सुभाष देहडू ने जाम्भा में आयोजित किए जा रहे छःमाही यज्ञ के लिए महन्त स्वामी रतिरामदास जी व स्वामी रामानन्द जी का धन्यवाद ज्ञापन किया तथा कहा कि यज्ञ ही हमारे समाज की पहचान है। ऐसे यज्ञ समाज में हमेशा चलते रहने चाहिए। बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से दो लाख रुपये का आर्थिक सहयोग भी दिया।

कार्यक्रम के अंत में बिश्नोई सभा जाम्भोलाव मेला के अध्यक्ष हीराराम भंवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन कमेटी के सचिव रूपाराम कालीराणा ने किया। मेला परिसर में अमर ज्योति, जम्भ ज्योति एवं जाम्भाणी साहित्य अकादमी की स्टाल पर जबरदस्त उत्साह देखा गया। मेले की पूर्व संध्या पर मेला परिसर में जिला परिषद सदस्य रावल जाणी की तरफ से बनवाई गई। प्याऊ का उद्घाटन भी समाज के जनप्रतिनिधियों द्वारा किया गया। मेला परिसर में चल रहे श्री विष्णु जाम्भोजी महायज्ञ में भी श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

मन्दिर के पास मारवाड़ अस्पताल के सौजन्य से डॉ. प्रशान्त बिश्नोई, डॉ. रामनिवास बिश्नोई व डॉ. हरीराम बिश्नोई के नेतृत्व में समाज के सवा सौ युवाओं ने रक्तदान किया। जाम्भाणी साहित्य की परीक्षा में इस क्षेत्र की तीन प्रतिभाओं का भी सम्मान किया गया। सम्पूर्ण मेला परिसर के खम्मुराम खीचड़ के नेतृत्व में सैकड़ों पर्यावरण प्रेमियों द्वारा प्रदूषण एवं पॉलीथीन मुक्त रखा गया।

❒ **रामनिवास हांणिया**
तह. बावड़ी, जोधपुर

लोदीपुर में भरा विशाल मेला

बिश्नोई समाज अष्टधामों में प्रमुख व उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में स्थित लोदीपुर धाम पर चैत्र की अमावस्या पर 20 मार्च, 2015 को विशाल मेला भरा। 19 मार्च की रात्रि को विशाल जागरण का आयोजन स्वामी कृष्णानन्द जी की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें स्वामी विश्वानन्द, स्वामी प्रणवानन्द आदि संतों व अनेक गायक कलाकारों ने भगवान श्री जम्भेश्वर की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य ने कहा कि लोदीपुर धाम की महता इसी में है कि यह भगवान की भक्त वत्सलता का प्रतीक है। भगवान जम्भेश्वर अपनी भक्तिन सुरजी देवी को दर्शन देने संभराथल से चलकर लोदीपुर आये थे तथा यहां खेजड़ी का वृक्ष लगाया था जो आज भी मौजूद है। स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान ने हमें जीवन जीने की उत्तम राह दिखाई थी। हमें उस राह पर चलकर अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

रात्रि जागरण में ही खुले अधिवेशन का आयोजन किया गया जिसमें श्री जसवंत सिंह बिश्नोई, अध्यक्ष, केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। अपने उद्बोधन में श्री जसवंत सिंह बिश्नोई ने कहा कि लोदीपुर धाम पूर्व में स्थित एक महत्वपूर्ण धाम है, जहां आकर मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूँ। आपने कहा कि 29 धर्म नियम ही हमारी पहचान है। यदि हम नियमों का पालन नहीं करते तो हमारे बिश्नोई होने का कोई अर्थ नहीं है। आज पर्यावरण को लेकर पूरा विश्व चिन्तित है जबकि गुरु जम्भेश्वर भगवान ने 500 वर्ष पहले ही हमें इसकी चेतावनी दे दी थी और इस समस्या का उपाय भी बताया था। स्थानीय आयोजकों द्वारा श्री जसवंत सिंह जी का पगड़ी पहनाकर व शॉल उढ़ाकर स्वागत किया गया।

लोधीपुर मेले के दौरान पूजा के लिए श्रद्धालुओं की लगी लंबी कतार।

20 मार्च को प्रात: सन्तों के सान्निध्य में विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। 120 सबदों सस्वर पाठ के पश्चात पवित्र पाहल बनाया गया जिसको ग्रहण करने का कार्य दिनभर चलता रहा। गुरु महाराज की ज्योति का दर्शन करने हेतु प्रात: ही श्रद्धालुओं की लम्बी कतार लग गई थी। इस मेले में उत्तर प्रदेश के साथ-साथ हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश से भी भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

❒ प्रमोद कुमार बिश्नोई
गांव चिन्दड़, जिला फतेहाबाद (हरि.)

सफल जीवन

जिसके धर्म-आचरण से पुत्र, मित्र और बन्धु-वान्धव जीवित रहते हैं उसी का जीवन सफल है, अपने लिए कौन नहीं जीता है। जिसकी वाणी रसमय (मधुर) है, पत्नी पतिव्रता है और लक्ष्मी (सम्पदा) दानवती है उसी का जीवन सफल है। जिसका यश है वही जीता है तथा जिसकी कीर्ति है वह भी जीता है। बुद्धिमान को उचित है कि दूसरों के उपकार के लिए धन और जीवन तक को अर्पण कर दे क्योंकि इन दोनों का नाश तो निश्चय ही है, इस लिए सत्कार्य में इनका त्याग करना अच्छा है। जीवन का एक क्षण भी कोटि स्वर्ण मुद्रा देने पर भी नहीं मिल सकता, वह यदि वृथा नष्ट हो जाय तो इससे अधिक हानि क्या होगी ? शरीर और गुण इन दोनों में बहुत अन्तर है। क्योंकि शरीर तो थोड़े ही दिनों तक रहता है और गुण प्रलयकाल तक बने रहतते हैं। जिसके गुण और धर्म जीवित हैं, वह वास्तव में जी रहा है, गुण और धर्म रहित व्यकित का जीवन निरर्थक है। वास्तव में उसी का जीवन उन्नति को प्राप्त होता है। गुरु जंभेश्वर भगवान ने कहा है कि जीवन में तप, इन्द्रिय संयम, सत्यभाषण और मनोनिग्रह - ये कार्य सबसे उत्तम हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह प्रिय-अप्रिय की स्थिति में समभाव रहे, किसी के मर्म में आघात न पहुंचाये, निष्ठुर वचन न बोले, क्योंकि वचन रूपी बाण जब मुँह से निकल जाते हैं, तब उनके द्वारा बींधा गया मनुष्य रात-दिन शोक में डूबा रहता है। जीवन में क्षमा, सत्य, सरलता और दया इन दैवी गुणों का अनुपालन करना चाहिए। वेद अध्ययन का सार है। इन्द्रिय संयम और इन्द्रिसंयम का फल है मोक्ष। यही सम्पूर्ण शास्त्रों का उपदेश है।

❒ ऋषिराम बिश्नोई (से.नि.) पुलिस-उप निरीक्षक
मुरादाबाद (उ. प्र.) मो. 07351092457

फार्म–4 (देखिए नियम 8)

1.	प्रकाशन स्थल	:	हिसार, हरियाणा
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	(क) मुद्रक का नाम	:	डोरेक्स ऑफसैट प्रिंटर्स, हिसार
	(ख) पता	:	न्यू दयानंद ऋषि विहार, डी.एन. कालेज रोड, हिसार
4.	प्रकाशक का नाम	:	श्री सुभाष देहडू
	पता	:	प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है ?)	:	हां
	(क्या विदेश है तो मूल देश है)	:	--
5.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
	पता	:	कार्यालय, 'अमर ज्योति' श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार, हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है ?)	:	हां
	(क्या विदेश है तो मूल देश)	:	--
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रशित से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों।	:	बिश्नोई सभा, हिसार

मैं सुभाष देहडू एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

सुभाष देहडू
प्रधान, बिश्नोई सभा,
हिसार-125 001 (हरियाणा)

मुख्य अष्ट धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2072, वैशाख की अमावस्या

लगेगी: 17.04.2015, वार शुक्रवार, रात्रि 3.36 बजे (शनिवार, सूर्योदय से पूर्व)
उतरेगी : 18.04.2015, वार शनिवार, रात्रि 12.26 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072, ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी: 17.05.2015, वार रविवार, प्रात: 11.59 बजे
उतरेगी : 18.05.2015, वार सोमवार, प्रात: 9.42 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072, आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी: 15.06.2015, वार सोमवार रात्रि 8.40 बजे
उतरेगी : 16.06.2015, वार मंगलवार, सायं: 7.35 बजे

प्रमुख मेले व पर्व

बैसाख अमावस्या मेला : 18.04.2015, वारासण, ओसिया
शहीद गंगाराम जाणी मेला : 26.04.2015, नेहड़ा पाली

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)

उन्नतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

श्री जम्भवाणी सार भक्त तू निर्मल हृदय धार

- विष्णु सर्वव्यापक है। वह सबके हृदयों में सदैव विराजमान रहता है। वह अपने भिन्न रूपों में ऐसे प्रकट होता है जैसे दूध में पानी और फूलों में पराग, वह चारों योनियों में, सप्त पातालों में, तीनों लोकों में, चौदह भवनों में, नदियों में नीर रूप में, सागर में रत्न रूप में सदैव निरन्तर रूप में विद्यमान रहता है।
- परमतत्त्व सबका सृजनकर्त्ता है। उसका रहस्य नहीं पाया जा सकता है। वह ताप और शीत से परे अथाह, गहन और वर्ण रहित है, उसे केवल अनुभव किया जा सकता है। अमृत के स्वाद की भान्ति उसके स्वरूप का वर्णन वाणी से सम्भव नहीं और न ही सागर में मछली के मार्ग की भान्ति उसका भेद पाया जा सकता है।
- आवागमन से मुक्ति का साधन केवल विष्णु जप है। वह उतना ही शक्तिमान है जितने स्वयं विष्णु अथवा स्वयंभू। विष्णु का जप ही मूल तत्त्व है इससे अमरत्व की उपलब्धि, जरा-मरण से छुटकारा और वैकुण्ठवास मिलता है। इससे मृत्यु उपरान्त क्षण मात्र में मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- निश्चल और एकाग्र वृत्ति वाले व्यक्ति ही अमृत तत्त्व को पाते हैं। यदि हृदय पावन व पवित्र है तो अड़सठ तीर्थ और काबा उसी में है। मनुष्य को सदैव आडम्बरहीन, सादगीपूर्ण एवं सदाचार युक्त जीवन जीना चाहिए।
- हे मोहम्मद खान ! यह संसार नश्वर है, इसमें स्थायी कुछ भी नहीं, पार्थिव वस्तुएं मिथ्या है, इसलिए पार्थिव वस्तुओं का अहंकार नहीं करना चाहिए।
- मानव देह पूर्व जन्मों के पुण्यों से प्राप्त होती है और मानव देह के इस पिंड से ही परमत्त्व को प्राप्त किया जा सकता है। माली जैसे बाड़ी को सींचता है वैसे ही शुद्ध आचरण से शरीर की रक्षा करनी चाहिए।
- सद्गुण के बिना मुक्ति संभव नहीं। गुरु की शरण बिना सुपथ नहीं मिलता और जीवन व्यर्थ जाता है। अत: गुरू कृपा से ही आत्मोपलब्धि संभव है क्योंकि गुरु जीवन मुक्त, कैवल्य ज्ञानी और अनन्तगुण सम्पन्न होता है।
- वाद-विवाद, झूठ, अहंकार, निन्दा, द्वेष भावना, क्रोध, मोह तथा चोरी का सर्वथा त्याग करना चाहिए। बैल, गाय, भेड़-बकरी तथा वन्य प्राणियों आदि निरीह जीवों की हत्या नहीं करनी चाहिए। हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिए।
- अपनी कमाई का दसवां हिस्सा दान में अवश्य देना चाहिए। परन्तु दान सदा निष्काम भाव से सुपात्र को ही देना चाहिए। ऐसा दान ही अमृत फल देता है।
- द्विकाल की संध्या, हवन-यज्ञ, तन और मन की पवित्रता, अमावस्या का व्रत, गुरुवाणी को मानना, सहज भाव से रहना, सुपथ पर चलना, सांसारिकता और कीर्ति के लोभ से दूर रहना आदि गुरु जम्भेश्वर के अमृत वचनों का सार है।

DOREXPrinters 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अप्रैल, 2015 को प्रकाशित करवाकर मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।